पंचम अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष

पंचम अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष

5.1 पुलिस प्रशासन की क्रूरता

5.2 चिकित्सा क्षेत्र में भ्रष्टाचार

5.3 राजनीति में चुनावी संघर्ष

5.4 धोखाधड़ी

5.5 बेरोज़गारी

पंचम अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष

साहित्य में राजनीति की प्रस्तुति प्राचीन काल से ही चली आ रही है। वर्तमान समय में साहित्य में राजनीति प्रभावी होती है और राजनीति से साहित्य। बोलने का भाव है कि साहित्य और राजनीति दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं। राजनीति सबसे शक्तिशाली व्यवस्था है। राजनीति के अंदर मूल्य स्वत: ही शामिल हो जाते हैं। "मूल्य व्यक्ति विवेक के आधार होते हैं उसी के केंद्रित भी। पर युग संदर्भ, परंपरा के कारण उनका विकास होता रहता है। राजनीति के कारण यह मूल्य चेतना विशेष प्रभावित होती है।"[1] राजनीति को साहित्य में व्यक्तियों का मूल्य माना गया है। इसके अंतर्गत बहुत से व्यक्ति इकट्ठे होकर राज्य पर विचार विमर्श करते हैं, सरकार का यह विचार-विमर्श सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का होता है। राजनीति में भ्रष्टता, मूल्य ह्रास एवं विनाश की स्थिति का बड़ा कारण है। इसी कारण राजनीतिक मूल्यों का ह्रास होता है। इसके अंतर्गत शासन पद्धति की मुख्य भूमिका रहती है। इस शासन के अंतर्गत शासकों व मंत्रियों को भी नीतियों का निर्धारण करना पड़ता है यदि राजनीति में थोड़ी-सी भी भूल-चूक हो जाए तो यह संपूर्ण राष्ट्र को हिला देती है। इसी कारण सरकार सोच- समझकर ही निर्णय व कार्य करती है। राजनीतिक चिंतकों ने राजनीति को परिभाषित करने में विभिन्न मतों का परिचय दिया है। इनके विचारों में एकरूपता नहीं है। "प्राचीन भारत के शास्त्रीय दृष्टि के अनुसार राजनीति शब्द का निर्माण संस्कृत के 'राज' और 'नीति' इन दोनों शब्दों के मेल से हुआ है। राजा एवं नीति का अर्थ है 'ले जाना।' राजा राज्यमिति प्रवृत्ति के संक्षेप के अनुसार राजा और राज्य में अभेद है। राजनीति का अर्थ 'राज्य के सम्यक संचालन' से ही समझा जाता था किंतु राजनीति शब्द वस्तुत अंग्रेजी शब्द 'पॉलिटिक्स' का हिंदी अनुवाद है। यह 'पॉलिटिक्स' शब्द भी युनानी शब्द 'पोलिस' से उत्पन्न हुआ है। जिसका त्रुटिपूर्ण अनुवाद 'नगर राज्य' है। वस्तुतः इसका सही भावानुवाद 'नगर समुदाय' है।"[2] स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सेवा, त्याग, बलिदान, राजनीतिक मूल्य थे। लोगों में देश की सेवा करने की भावना थी, इसी भावना से प्रेरित होकर लोग शिक्षाविधि, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों से महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजनीति में आए। इन लोगों के प्रति जनता

के मन में अत्यधिक सम्मान की भावना थी। आज़ादी के समय जनता ने स्वप्न देखा था कि देश आज़ाद होने के बाद भारत देश में आदर्श जनतंत्रात्मक व्यवस्था, वर्गहीन समाज व्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था स्थापित होगी लेकिन आज़ादी के बाद लोगों का यही स्वप्न केवल स्वप्न बनकर ही रह गया। जिसके परिणामस्वरूप लोगों में जो आशा थी, उसी आशा के स्थान पर निराशा, अशांति और अनिश्चितता उनके हाथ लगी। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में आधुनिक राजनीति में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के आलोक में विघटित होते राजनीतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। सत्ता लेने के लिए राजनीति में स्वार्थता, मूल्यहीनता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, पदलोलुपता चुनावों में धन का दुरुपयोग, झूठे वायदे, जातिवाद आदि मुद्दे पूरी तरह से जनता को प्रभावित कर रहे हैं। आज का राजनेता राजनीति में आने के बाद आम जनता के हितों से मतलब न रखकर कुर्सी प्राप्त करना महत्वपूर्ण समझते हैं। ऐसी मतलबी प्रवृत्ति आने के बाद लोगों में अत्याचार, भ्रष्टाचार तथा चरित्रहीनता जैसी प्रवृतियां घर कर गई है। आज भी भारत देश में राजनीतिक पतन की स्थिति बनी हुई है। जिसके कारण कुछ भी हो सकते हैं- जैसे धर्म या रोटी। यह सभी वोट की राजनीति से तय होने लगे हैं। इस भ्रष्ट राजनीति और दुष्ट चरित्रता एवं अपराध के गठजोड़ में जनजीवन में असहायता और असुरक्षा की भावना ने घर कर लिया है। वोट की राजनीति ने भ्रष्टाचार को प्रमुखता दी है। राजनीति और उससे उत्पन्न होने वाले भ्रष्टाचार ने मनुष्य को बुरी तरह से झकझोर दिया है। वोट लेने के समय नेता लोग बड़े-बड़े वायदे करते हैं, आम जनता को अपनी झूठी बातों में फंसा लेते हैं। उनकी इन बातों से आम जनता को नेता लोग भले प्रतीत होने लगते हैं जो कि जनता का भ्रम होता है। राजनीतिज्ञ अपनी बातों को जनता के समक्ष ऐसे रखते हैं कि जनता को नेता लोगों की बातों को स्वीकार करने के अलावा कोई अन्य मार्ग नहीं सूझता। नेता लोग आम आदमी के लिए बनाए गए शब्दों के साथ खेलना चाहते हैं तथा उन्हीं शब्दों से अपना लाभ उठाते हैं। नेताओं का मुख्य उद्देश्य जनता के हित में काम करना होता है परंतु आज के नेता इतने स्वार्थी हो गए हैं कि उन्हें आम जनता की कोई चिंता नहीं रह गई है। आज के समय में नेता ही नहीं बल्कि उच्च पदों पर आसीन प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों को सामने रखकर कार्य करता है। यह लोग अपने पदों पर

बैठकर जनता का शोषण कर रहे हैं। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से जनता को जागरूक किया है ताकि स्थिति में सुधार आ सके। उपन्यासों में सरकारी कानून व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में दिखाया है कि आज सुरक्षा के स्थान पर भी जनता का शारीरिक शोषण होता है। कहीं भी जनता स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं करती। उपन्यास के पात्र सुरक्षा के स्थान पर शोषित होते दिखाए गए हैं। लेखिका द्वारा शोषण, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, हिंसा, लोकतंत्र पर हमला आदि प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था तथा गंदी राजनीति के कारण मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। आज का आदमी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन विषमताओं की चपेट में आ रहा है। समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, पदलोलुपता जैसी बुराइयां फैली हुई हैं। यही बुराइयां ईमानदार व्यक्तियों के लिए मूल्य विघटन का कारण बन रही हैं। ऐसे फैले आतंक के कारण कोई भी व्यक्ति सच्चाई के मार्ग पर नहीं चलना चाहता। इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्यों के राजनीतिक पक्ष को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है:-

5.1 पुलिस प्रशासन की क्रूरता

प्राचीन काल से ही राजनीति में पक्षपात की भावना देखी गई है। उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति निम्न पद पर कार्यरत व्यक्तियों या आम जनता से भेदभाव रखता है। इसका पीछे कारण यह होता है कि उच्च पद पर बैठे व्यक्ति अपनी शक्ति को लेकर जनता से ऐसा बुरा व्यवहार करता है। वर्तमान समय में यह समस्या उग्र रूप धारण कर गई है। बड़े अधिकारी उच्च पदवी के नशे में निम्न पद वाले व्यक्तियों से बुरा व्यवहार करते देखे जा सकते हैं, कुछ ऐसी ही स्थिति उपन्यास 'चाक' में चित्रित की गई है। उपन्यास में लेखिका ने पुलिस प्रशासन की क्रूरता को दिखाया है। उपन्यास में चुनाव का समय चल रहा होता है। चुनाव के प्रचार के समय दो व्यक्तियों में किसी बात को लेकर लड़ाई हो जाती है, दोनों में हाथापाई होने लगती है। उपन्यास का पात्र पन्ना काफी घायल हो जाता है "किसी का भी भाई हो या बेटा। चुनाव चल रहा है। आजकल ऐसे सैंकड़ों पन्ना फन्ना आ रहे हैं। कोई दमदार आदमी लाते तो बात अलग...काहे को अपना और

हमारा वक्त खुदा करते हो यार।"[3] पन्ना को मारपीट कर सड़क पर फेंक देते हैं। सब लोग यह देखते हैं लेकिन उसे हाथ कोई नहीं लगाता। उपन्यास का एक अन्य पात्र बोहरे वहां पहुंचता है लेकिन वह देखता है कि पन्ना तो पूरी तरह भीड़ में घिरा होता है। बोहरे का उससे कोई खून का नाता नहीं है लेकिन दोनों एक गांव के निवासी होते हैं। इसीलिए बोहरे, पन्ना को उठाता है तथा पानी पिलाकर पुलिस स्टेशन ले आता है। यहां पर पुलिस का एक क्रूर रूप देखने को मिलता है। पुलिस घायल पन्ना के केस को दर्ज करने से इंकार कर देती है क्योंकि पुलिस स्वंय को चुनाव के प्रचार में व्यस्त बताती है। पुलिस का कहना है कि आजकल ऐसे हज़ारों आते हैं। अगर वह ऐसे केसों को देखने लगे तो उनका समय खराब होगा। इस तरह उपर्युक्त उदाहरण में पुलिस कर्मचारी यहां तक कह देता है कि अगर कोई पैसे वाला व्यक्ति होता तो हम उसका केस दर्ज कर लेते। इस तरह उपन्यास में पुलिस प्रशासन की कुनीति को दिखाया गया है। पुलिस प्रशासन भेदभाव करते हुए देखे जा सकते हैं। बोहरे पुलिस की बातों को सुनकर दंग रह जाते हैं। पुलिस कर्मचारी उनकी रिपोर्ट को कचरा बताते हुए, उन्हें वहां से जाने को कहते हैं। बोहरे, पन्ना को लेकर गांव वापस आ जाते हैं। यहां पर लेखिका ने समाज में व्याप्त भेदभाव की नीति के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि समाज का उच्च वर्ग समस्त नैतिक मूल्यों को ताक पर रखकर अपने से निम्न लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। जिसके कारण राजनीतिक मूल्यों का ह्रास होता है। लोगों के ऐसे कार्यों से सामाजिक मूल्यों का भी उल्लंघन होता है। यहां तक कि पुलिस कर्मचारी पैसे के बल पर ही कार्य करते हुए नज़र आते हैं। वर्तमान समय में भी पुलिस कर्मचारियों की यही दशा देखने को मिलती है। पुलिस प्रशासन की ऐसी ही नीति नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'अक्षयवट' में भी चित्रित की है "इलाहाबाद शहर में ही नहीं बल्कि पूरे हिंदुस्तान में पुलिस दो फाक हो चुकी है। एक वह अपनी सत्ता का गलत इस्तेमाल करती है... दूसरी वह जो कानून की रखवाली करती है, जनता की सेवा में अपनी जान गवा देने में गर्व का अनुभव करती है।"[4] यहां पर नासिरा शर्मा ने पुलिस प्रशासन के नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों पक्षों को रखा है। पुलिस का एक रूप जो कि अपनी जान को दांव पर लगाकर जनता की रक्षा करती है लेकिन मैत्रेयी पुष्पा

के उपन्यास साहित्य में पुलिस प्रशासन का इसके विपरीत रूप देखने को मिलता है।

पुलिस प्रशासन से जनता को यही उम्मीद रहती है कि उनके रहते हुए हम सुरक्षित हैं। पुलिस प्रशासन की नियुक्ति भी इसी उद्देश्य से होती है कि वे लोगों की रक्षा करें। पुलिस का नाम सुनते ही लोगों द्वारा अपराध प्रवृति का मार्ग भी भूल जाना स्वाभाविक होता है क्योंकि अगर कोई अपराध या कानून के विरुद्ध कार्य करता है तो पुलिस प्रशासन द्वारा उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाती है। सजा चाहे कोई भी सुनाए लेकिन दंड तो पुलिस प्रशासन ही देता है इसलिए लोग सजा के डर से अपराध के मार्ग पर चलने से डरते हैं। उपन्यास 'फ़रिश्ते निकले' में पुलिस प्रशासन का यही रूप देखने को मिला है। "इसी खडग की मां सोमती चिमटा, खुरपी, करछूल, चिमटा बेचने निकली और पुलिस वाले ने छेड़ दी और आपस में बहस करने लगे वे दोनों पुलिस सिपाही- पहले मैं, पहले मैं।"[5] उपन्यास की नारी पात्र सोमती लोहे से बने औज़ारों को बेचने के लिए निकली थी लेकिन पुलिस कर्मचारी उसको छेड़ते हैं तथा उसके साथ गंदी हरकतें करते हैं। यह लोहे से सामान बनाने वाले किसी एक स्थान पर नहीं रहते बल्कि अपने डेरों को एक स्थान से दूसरे स्थानों पर बदलते रहते हैं। इस प्रकार उपन्यास में पुलिस कर्मचारियों का ऐसा रूप दिखाया है जिसमें जनता द्वारा उनसे सुरक्षा की उम्मीद बिल्कुल नहीं रखी जा सकती। आज के समय में जनता अपने सुरक्षाकर्मियों अर्थात पुलिस से भी सुरक्षित नहीं है। आज की न्याय व्यवस्था इतनी भ्रष्ट हो गई है कि किसी से आप न्याय और सुरक्षा की अपेक्षा नहीं रख सकते। लेखिका ने गिरते अर्थात विघटित होते राजनीतिक मूल्यों को चित्रित किया है। वर्तमान समय में भी पुलिस कर्मचारी ऐसे-ऐसे कारनामे करते हैं जिससे लोगों का इन पर से विश्वास उठता जा रहा है जैसे कि पहले उदाहरण में बताया है कि पुलिस वाले एक घायल व्यक्ति की रिपोर्ट नहीं लिखते क्योंकि वह उपन्यास पात्र गरीब व्यक्ति होता है। अगर उसके बदले कोई उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति होता तो मैं उसकी रिपोर्ट अवश्य लिखता। इस प्रकार आज का पुलिस प्रशासन पैसे पर आधारित हो गया है तथा उसने अपने कर्तव्यों को पैसे पर आंकना शुरू कर दिया है। इस तरह उपर्युक्त उदाहरण में पुलिस कर्मचारी भद्दी हरकतें करते हुए देखने को मिलते हैं। शारीरिक लिप्सा भी राजनीतिक मूल्य के विघटन का प्रमुख

कारण पाया गया है। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी अपनी शक्ति के बल पर अपनी शारीरिक भूख मिटाना चाहता है। पुलिस प्रशासन भी इसी कार्य को अंजाम देते देखी गई है। ये इसीलिए ऐसा करते हैं क्योंकि इनको कोई बोलने वाला नहीं है। शक्ति इनके हाथ में है तथा अपनी इसी शक्ति का दुरुपयोग करते उपन्यास में देखने को मिलता है। इस तरह लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में आज की भ्रष्ट पुलिस नीति को दिखाया है। इन्होंने अपने उपन्यास के माध्यम से निम्न तथा स्त्री वर्ग को जागरूक किया है। अगर ऐसा ही भ्रष्ट पुलिस प्रशासन रहेगा तो मूल्य विघटन या मूल्य परिवर्तन होना स्वभाविक है। 'गुनाह बेगुनाह' शीर्षक उपन्यास में इला चौधरी महिला पुलिस कर्मचारी है। इला चौधरी एक कांस्टेबल के पद पर कार्यरत होती है। वह पुलिस प्रशासन में लोगों की मदद करने के उद्देश्य से ही भर्ती हुई है लेकिन यहां पर आने पर उसे पुलिस प्रशासन का असली चेहरा पता चलता है। इला पुलिस प्रशासन के कुरूप चेहरे को देखकर अत्यंत दुखी रहती है लेकिन वह किसी से कुछ नहीं कहती, अपनी ड्यूटी करती रहती है। "रंडी को गिरफ्तार करना है।"[6] उपन्यास में एक पुरुष पुलिस कर्मचारी है जो कि इला को किसी महिला को गिरफ्तार करने के लिए बोलता है लेकिन वह पुरुष पुलिस कर्मचारी 'रंडी' शब्द का प्रयोग करता है। इला को यह सब सुनकर हैरानी होती है। वह पुलिस कर्मचारी इला को समझाता है कि रंडी को रंडी ही कहेंगे और अपराधी महिला को क्या बोला जाता है? उपन्यास में पुरुषों का औरतों के प्रति दृष्टिकोण चित्रित किया है। मर्दानी पुलिस यह नहीं भूलना चाहती कि यह औरतों के लिए अपमानजनक तोहफा है। आज का पुलिस प्रशासन इतना भ्रष्ट है कि प्रत्येक नारी को एक ही नज़र से देखते हैं चाहे उसका कसूर हो अथवा नहीं। उपन्यास में मज़बूर स्त्री को भी अपराधियों के तराजू में तोला गया है। यहां पर प्रत्येक व्यक्ति इंसाफ या रक्षा के उद्देश्य से आता है लेकिन पुरुष पुलिस कर्मचारियों ने उसकी मज़बूरी का गलत फायदा उठाया है। विवेच्य उपन्यास में पुरुष कर्मचारियों की शारीरिक लोलुपता का चित्र भी देखने को मिलता है। "दीदी आप...इन लोगों ने तो आपके आने से पहले ही तलाशी ले ली। सारे कपड़े उतार लिये...अब फिर...।"[7] पुलिस स्टेशन में एक बीस साल की लड़की पुलिस से मदद मांगने के उद्देश्य से आती है। इसका नाम रेशमी होता है, रेशमी अपने बाप द्वारा शोषित होती है। जिसकी रिपोर्ट लिखवाने के लिए वह

पुलिस स्टेशन पहुंची है लेकिन पुरुष एस.आई ने रेशमी से ज़बरदस्ती शारीरिक संबंध बना लिये। पुरुष पुलिस ने महिला पुलिस का इंतजार नहीं किया तथा उससे पहले तलाशी ले ली। तलाशी के बहाने रेशमी के कपड़े फाड़ दिए जाते हैं। यहां पर कोई भी औरत आती है उसका बंटवारा कर लिया जाता है जैसे किसी रिश्वत का होता है। इस प्रकार उपन्यास में पुलिस प्रशासन के घिनौने रूप को दिखाया है। वर्तमान समय में भी ऐसे ही भ्रष्ट पुलिस प्रशासन के किस्से सुनने को मिलते हैं। आज कहीं भी ईमानदार कार्यालय नहीं रहा। सब जगह शोषण ही शोषण हो रहा है चाहे वह शोषण मानसिकता का हो या शारीरिक हो। हर जगह कर्मचारी अपनी लालसाओं की पूर्ति करने में लगे रहते हैं। उपन्यास में रेशमी पुलिस स्टेशन में भी शोषित होती है। रेशमी यहां पर इसी आशा से आती हैं कि उसे यहां न्याय मिलेगा। उसके आरोपी पिता को सजा मिलेगी लेकिन यहां पर बिल्कुल ही दृश्य विपरीत हो जाता है। इसी उपन्यास की एक अन्य नारी पात्र सुनीता का चरित्र सामने आता है। सुनीता अपने चाचा के पास रहती है लेकिन चाचा की नियत में खोट होता है, इसका सुनीता को कुछ पता नहीं होता। चाचा ने सुनीता को एक ट्रक वाले को बेच दिया। ट्रक वालों ने जितने दिन हो सका सुनीता के साथ अपनी मनमाने की। जब इस ट्रक वाले का मन भर गया तो इसने सुनीता को अपने ही साथी ट्रक वाले को पांच हज़ार में बेच दिया। सुनीता इनके अत्याचारों से तंग आ गई तथा वहां से एक दिन भाग निकली। सुनीता भागते हुए किसी सुनसान स्थान पर गिरी थी। पुलिस ने सुनीता को उठाया था, पुलिस स्टेशन में ले आए। जब सुनीता को होश आया तो उसने स्वयं को एक सुरक्षित स्थान पर अनुभव किया लेकिन उसे क्या पता था? कि यह कोई सुरक्षा स्थल नहीं बल्कि एक नारी शारीरिक शोषण का केंद्र है। महिला पुलिस कर्मचारी भी वहीँ बैठी थी, उन्होंने सुनीता को होश आते ही देखकर प्रसन्नता ज़ाहिर की। उन दोनों को डी.एस.पी के रीडर ने वहां से जाने को कह दिया तथा समीना और इला कमरे से बाहर आ गई। "रीडर सर लड़की के नंगे बदन से चिपटे हुए हैं लड़की छटपटा रही है।"[8] इला और समीना बाहर होती हैं तथा इसी बीच लाइट चली गई। इला और समीना जब कमरे में आई तो अचानक से लाइट आ जाती है। उन्होंने एक ऐसा दृश्य देखा कि वह दोनों दंग रह गई। सुनीता के साथ रीडर जबरदस्ती कर रहा था, जिस स्थान को सुनीता ने सुरक्षित समझा था वही

उसके लिए हैवान घर साबित हुआ। इस प्रकार उपन्यास में पुलिस रीडर की राक्षस नीति सामने आई है। इला और समीना यह सब देख कर चुप रह गई क्योंकि वह सर के आगे कुछ नहीं बोल सकती थी। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने पुलिस प्रशासन की बर्बरता के दर्शन करवाए हैं। कथा में युवती अपने समाज से ही त्रस्त होती देखी जा सकती है। पुलिस वाले ऐसे ही युवतियों का बलात्कार करते हैं। उपन्यास में न्याय व्यवस्था दिखाई गई है लेकिन यहां पर न्याय, ईमानदारी की मृत्यु हो चुकी दिखाई देती है। जिस आशा से महिलाएं पुलिस स्टेशन में आती हैं, वहीं से वे निराश होकर चली जाती हैं। उपन्यास में सत्ताधारी लोग धीरे-धीरे इस तरीके से न्याय को अपने वश में करते देखे जा सकते हैं। उपन्यास में कानून की निस्सारता दिखाई गई है। पुलिस विभाग रक्षक की जगह भक्षक बना दिखाई देता है। जब कोई लाचार और मज़बूर औरत पुलिस स्टेशन पर आती है, तभी पुरुष पुलिस कर्मचारी उनका नाज़ायज फायदा उठाते हैं। जहां पुलिस कर्मचारियों को अपनी ड्यूटी के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार होना चाहिए वहीं पर उपन्यास में पुरुष पुलिस कर्मचारी अपनी पशुवृत्ति को और भी खुलकर मौका देते हैं। पुलिस कर्मचारी महिलाओं के पूरे शरीर को मथ देता है तथा भद्दी-भद्दी गालियां देते हैं। इस प्रकार उपन्यास में समाज की पुलिस व्यवस्था का चित्रण किया है। जिस समाज में ऐसी पुलिस व्यवस्था होगी वहां पर न्याय प्रणाली इससे भी भ्रष्ट होगी। उपन्यास की कथा से आज की पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

उपन्यास की एक अन्य स्त्री पात्र शीतल की व्यथा सामने आई है। शीतल ने अर्जुन के साथ प्रेम विवाह किया था। अर्जुन शराब पीता था लेकिन शादी के बाद कुछ ज्यादा ही पीने लग पड़ा है। विवाह के बाद अर्जुन अधिक शराब पीने के कारण अपने दोस्तों को भी घर में बुलाने लग पड़ता है। इन दोस्तों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगती है। जब भी अर्जुन शराब पीता है तो उसे अपनी भी होश नहीं रहती तथा वह अपने दोस्तों को यहां तक बोल देता है कि आप शीतल के साथ जो मर्जी करो लेकिन बच्चा न रह जाए बस। सब दोस्त बारी-बारी शीतल से शारीरिक संतुष्टि करते हैं। अगर शीतल पति की आज्ञा नहीं मानती तो वह इस घर के सिवाय कहां जाती क्योंकि उसने प्रेम विवाह किया था। जिसके कारण उसके माता-पिता का दरवाजा भी हमेशा के लिए बंद हो गया

था। अर्जुन को सिर्फ शराब चाहिए थी और कुछ नहीं। शीतल इन अत्याचारों से तंग आ गई थी। उसने एक दिन इन अत्याचारों का अंत करने के लिए अपने पति अर्जुन पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी। इस तरह शीतल को एक अपराधी मानकर पुलिस स्टेशन में लाया जाता है क्योंकि उसने अपने पति की हत्या की थी। वह परिवार में पीड़ित शोषिता थी और बाद में भी शारीरिक शोषण की शिकार हुई। "देख तू कत्ल केस की मुजरिम है, सर जैसे चाहे, वैसे...नहीं तो जेल में सड़ेगी।"[9] पुलिस स्टेशन में भी शीतल को शारीरिक शोषण की मार सहनी पड़ी। शीतल एक सब इंस्पेक्टर के हाथ में आ जाती है। सब इंस्पेक्टर उससे पूरी मनमानी करता है। शीतल को धमकी दी जाती है कि जैसे सर कहेंगे उसे वैसा ही करना पड़ेगा। अगर शीतल यह सब नहीं करती तो उसे पूरी उम्र जेल में रखा जाएगा। यह सब धमकी शीतल को सीनियर कॉन्स्टेबल देती है। सीनियर कॉन्स्टेबल महिला यह सब इसीलिए कहती है क्योंकि उसे अपने सर को खुश करवाना था। सर के खुश होने के बाद ही उसे प्रमोशन मिलेगा। यहां पर एक महिला पुलिस कर्मचारी अपनी कामयाबी के लिए एक महिला को ही शोषित करवाती दिखाई गई है। "जिनकी कृपा से इस सीनियर कॉन्स्टेबल को हेड कांस्टेबल बनना था।"[10] इस प्रकार उपन्यास में पुलिस प्रशासन की शारीरिक लिप्सा को दिखाया गया है। समाज के बड़े लोगों की काम विकृति को दिखाया है। अपनी कामवासना को शांत करने के लिए मुजरिम महिलाओं को भी नहीं छोड़ा गया है। मज़बूर नारियों की मज़बूरी का नाज़ायज फायदा उठाते पुलिसकर्मी देखे गए हैं। साथ ही उपन्यास में एक तथ्य और उभर कर सामने आया है कि लोग अपनी पदोन्नति के लिए भी गलत कार्यों को बढ़ोतरी देते हैं। बड़े अधिकारी उच्च पद के नशे में निम्न पद वाले व्यक्तियों से बुरा व्यवहार करवाते हैं। सीरियल कॉन्स्टेबल को उच्च पद की लालसा होती है जिसके कारण वह भी कुकर्म करने से नहीं चूकती। इस तरह उपन्यास में विघटित होते राजनीतिक मूल्यों को दिखाया गया है।

वर्तमान समय में भी ऐसी ही दशा हो गई है कोई भी व्यक्ति किसी अन्य का मुफ्त में काम नहीं करता। अपना काम साधने के लिए किसी न किसी को माध्यम बनाता है। उपन्यास में शोषित होती नारी का चित्रण किया गया है जो स्त्री अपने घर में सुरक्षित नहीं कहीं अन्य स्थान पर स्वयं को सुरक्षित कैसे

अनुभव कर सकती है? इला चौधरी को पुलिस स्टेशन पर चल रहे ऐसे उत्पीड़न को देखकर अत्यंत ही दुख होता है। वह अपने आप को कोसती है कि वह पुलिस प्रशासन में नौकरी करने के लिए क्यों आई? वह पुलिस फोर्स में आना स्वयं की बहुत बड़ी गलती मानती है। इला ने पुलिस में आने के लिए न जाने कितने सपने सजाए थे लेकिन सपने केवल सपने ही रह जाते हैं। वह स्वयं को पुलिस सुरक्षाकर्मी न समझकर कुछ और ही समझने लगती है। उपन्यास में मुजरिम महिलाओं का ही शोषण नहीं होता बल्कि महिला पुलिसकर्मियों को भी शोषण का शिकार होना पड़ता है। इन्हें भद्दी-भद्दी गालियों का भी शिकार बनना पड़ता है। "इस चुहडी को देखो, कितना मिजाज है। सिर पर गंदगी का टोकरा उठाने लायक है और गई पुलिस फोर्स में। वर्दी पहन कर समझ रही है कि न यह लुगाई और भगिनी।"[11]पुरुष पुलिसकर्मी महिला पुलिस कर्मचारियों को जाति के नाम से गालियां देते हुए देखे गए हैं। जाति का नाम लेना एक कानूनी जुर्म है। यहां पर इन कानून के मालिकों के लिए कोई सजा नहीं है। एक महिला पुलिस कर्मचारी ने इन गालियों का विरोध भी किया तथा गालियों के विरुद्ध अर्जी भी लिखी थी लेकिन इस अर्जी को दर्ज ही नहीं किया। पुलिस स्टेशन का ऐसा वातावरण देखकर इला बहुत दुखी रहती है। वह सोचती है कि औरत जात को गालियों से भरे इंजेक्शन दिए जाते हैं। इला कुछ दिनों के लिए गांव आती है लेकिन वह पुलिस स्टेशन के दृश्य को नहीं भूल पाती। उसके माता-पिता इला पर गर्व करते हैं। इला अंदर ही अंदर सोचती है कि जिस नौकरी पर मां-बाप गर्वित हैं, इला उसी नौकरी को त्यागना चाहती है। उन्हें नहीं पता कि वह एक नरक में रहती है। इला मन ही मन विचार करती है कि जिस नौकरी के लिए वह घर छोड़कर भागी थी, जिन मां-बाप को त्याग दिया था, आज इला इन्हीं के पास आना चाहती है। जिस नौकरी के लिए उसने अपना ओछापन दिखाया था, आज उस नौकरी को घटिया समझती है। नौकरी के लिए किया गया घटियापन उसे तड़पाता है। इतना सब होने के बावजूद भी को उसके माता-पिता ने उसे अपना लिया। उसके मां-बाप अपनी नौकरी वाली बेटी को सबसे मिलवाते हैं लेकिन इला अंदर ही अंदर पुलिस प्रशासन के रूप को देखकर टूट गई होती है। इस प्रकार लेखिका ने बताया है कि आज की कानून व्यवस्था सिर्फ नाम की ही रह गई है। इस कानून व्यवस्था में न्याय लुप्त हो रहा है। पुलिस प्रशासन इतना

क्रूर हो रहा है कि अपने ही कार्यालय में काम करने वाली महिला कर्मियों के साथ दुर्व्यवहार कर रहा है। कोई महिला पुलिस कर्मचारी, पुरुष कर्मचारियों के बगल में नहीं सोती तो उन्हें भद्दी-भद्दी गालियां दी जाती हैं। इस प्रकार कथा में पुलिस कर्मचारियों की भूमिका का वर्णन किया गया है। साथ ही महिलाओं को एकमात्र भोग विलास की वस्तु माना गया है। वर्तमान समय में भी पुलिस महिलाओं की भी यही स्थिति है। उन्हें अपने प्रशासन के पुरुषों की शक्ति का शिकार होना पड़ता है। अगर वह अपनी मर्जी करती है तो उन्हें नौकरी से बाहर करने की धमकी दी जाती है इसीलिए कई महिलाओं को विवशतापूर्ण पुरुषों की मनमानी का शिकार होना पड़ता है। उपन्यास की एक स्त्री पात्र जो कि प्रेम विवाह करना चाहती है। इसके घरवाले शादी के विरुद्ध होते हैं। लड़की ने भाग कर शादी कर ली। लड़की को माता-पिता का भय सताने लगा जिसके कारण उसने पुलिस से अपनी सुरक्षा हेतु सहायता मांगी। उसने सहायता इसीलिए ली कि जब भी उसके माता-पिता उसे ढूंढते हुए यहां आए तो पुलिस उसके साथ हो। घरवाले उसको कोई नुकसान न पहुंचाएं। लड़की ने अपने माता-पिता को बता दिया था कि उसे कोई भगा कर नहीं लाया बल्कि वह स्वयं अपनी मर्जी से शादी कर रही है। "यहां सुरक्षा के नाम पर लड़की को पकड़कर पुलिस इंस्पेक्टर ने बलात्कार किया।"[12] लड़की ने जहां पुलिस से सुरक्षा की उम्मीद की थी लेकिन यहां पर इंस्पेक्टर ने स्वयं ही लड़की का बलात्कार कर दिया। लड़की यहां पर घरवालों के डर से बचने के लिए रिपोर्ट लिखवाने आई थी ताकि उसे तथा उसके पति को कोई नुकसान न पहुंचाएं लेकिन पुलिस स्टेशन में आते ही दृश्य बदल जाता है। सहायता मांगने के नाम पर उसका बलात्कार कर दिया जाता है। लड़की ने पुलिस स्टेशन में घर वालों तथा अन्य लोगों के सामने यह कबूल किया कि जिससे शादी हुई उसने तो ऐसा संबंध नहीं बनाया। यह शारीरिक संबंध तो इस पुलिस इंस्पेक्टर ने बनाया है। अगर लड़के के साथ शारीरिक संबंध बनाती तो यह हम दोनों की रजामंदी से बनता, न की ज़बरदस्ती। लड़की का डी.एन.ए. टेस्ट हुआ तथा बलात्कार साबित हुआ। इतना सब होने के बाद और सबूत के बावजूद भी केस को उलझा दिया गया। किसी को भी कानो कान खबर नहीं होने दी कि पुलिस इंस्पेक्टर पर ऐसा केस बन गया है। चुपचाप केस को अंदर ही अंदर दबा दिया गया। इस प्रकार उपन्यास

में भी विघटित हो रहे राजनीतिक मूल्यों की चर्चा हुई है। इस मूल्य विघटन के पीछे यह सरकारी पदों पर बैठे कर्मचारी ही उत्तरदायी हैं। यह लोग अपनी कुर्सी का गलत प्रयोग करके अपनी सत्ता कायम रखते हैं। यहां पर असरदार लोग अपने पैसे के बल पर केस को नजरअंदाज करवा देते हैं। गवाहों को तरह-तरह के लालच देकर सच्चाई से मुकरा देते हैं। इस प्रकार लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज सत्य का समय नहीं। सच्चाई तथा ईमानदारी पर कोई टीका नहीं रहना चाहता। सब लोग लालची प्रवृत्ति के हैं, जिधर उन्हें अपना स्वार्थ सिद्ध होता दिखे उधर का पलड़ा भारी होता दिखाई देता है। आज भी पुलिस प्रशासन की ऐसी दशा हो गई है। आज का पुलिस प्रशासन इतना शारीरिक लोलुप हो गया है कि कार्यालय में काम करने वाली महिलाओं या सुरक्षा मांगने आई हो। उसे शोषित होता दिखाई देता है। सभी के लिए पुरुष एक ही तराजू रखता है। आज की पुलिस भी शारीरिक संबंध बनाकर ही कोई काम करती है। सुरक्षा के नाम पर एक काला धब्बा लग गया है। यही कारण है कि कोई भी नारी पुलिस प्रशासन से सहायता मांगने के लिए सौ बार सोच में पड़ जाती है। उपन्यास की नायिका इला जो कि घर से भागकर पुलिस में भर्ती होती है लेकिन जब उसे पुलिस प्रशासन का ज्ञान होता है वह पुलिस प्रशासन से घृणा करती है। उसको यह सोचने पर मज़बूर होना पड़ता है कि स्त्री जहां अपने घर में ही सुरक्षित नहीं है तो एक पुलिस स्टेशन में कब सुरक्षित हो सकती है।

उपन्यास की एक महिला पात्र शारदा का वर्णन मिलता है। शारदा ने अपने ही बेटे का कत्ल कर दिया होता है। शारदा ने संजय अर्थात अपने बेटे को इसलिए मारा क्योंकि वह अपनी ही बहन का बलात्कारी कर देता है। शारदा ने संजय को बहुत समझाया लेकिन वह नहीं माना। शारदा का कसूर इतना था कि पति के मर जाने पर उसने देवर के साथ शादी कर ली थी। उसी देवर से विवाह के बाद शारदा को बेटी होती है। संजय ने उसे अपनी बहन नहीं माना तथा एक दिन उसका बलात्कार कर दिया। मां से बदला लेने के लिए संजय ने बहन को मोहरा बना दिया। इसके पीछे शारदा के ससुराल वाले भी थे। उन्होंने संजय को मां के खिलाफ भड़काया था। शारदा ने संजय को समझाने के लिए पुलिस से भी सहायता मांगी थी "घर परिवार मौन साधे रहा और थानेदार उसके हाथों बिक गया।"[13] यहां पर शारदा के घर वालों ने पुलिस प्रशासन को पैसा देकर इस

मामले से अलग कर दिया था। पुलिस ने पैसे के आगे सच्चाई पर पर्दा डाल दिया था। इस प्रकार लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज पैसे के आगे बड़े से बड़ा जुर्म छिप जाता है। संजय को कुकर्म के लिए आगे बढ़ाने वाली पुलिस ही उत्तरदायी है। अगर पुलिस संजय को सजा से अवगत कराती तो वह इतना बड़ा कुकर्म न हीं करता। इस प्रकार उपन्यास में पैसे का हिंसक रूप देखने को मिलता है। जब शारदा के पास कोई मार्ग नहीं बचा तो उसने एक दिन संजय को मौत के घाट उतार दिया। एक बेटे की हत्या के मामले में शारदा को जेल हो जाती है। शारदा का दोष सिर्फ इतना था कि उसने कुकर्म करते भाई की हत्या की। पुलिस स्टेशन में एक मां को थर्ड क्लास डिग्री की सजा दी जाने लगी। सजा इतनी असहनीय थी कि एक दिन शारदा की मौत हो गई "शारदा इज किल्ड बाय पुलिस। पुलिस हैव किल्ड शारदा।"[14] यहां पर पुलिस प्रशासन का एक अन्य रूप सामने आता है, जहां पर पुलिस का अधिकार था कि शारदा को सजा दे लेकिन पुलिस ने ऐसी सजा दी कि उसे मौत की नींद सुला दिया। इस प्रकार उपन्यास में पुलिस प्रशासन की क्रूरता का वर्णन किया गया है। लेखिका ने कथा के माध्यम से दिखाया है कि जिस पुलिस की नियुक्ति आम लोगों की सहायता, सुरक्षा के लिए होती है, वही पुलिस आज एक हिंसक रूप धारण कर चुकी है। पुलिस ने ऐसे काम हाथ में ले रखे हैं जिनकी केवल पुलिस स्टेशन में ही तस्वीर है। बाहरी दुनिया में तो पुलिस सुरक्षाकर्मी हैं। प्रशासन की करतूतों से भ्रष्टाचार, अनैतिकता जीवन का अंग बन गया है। ऐसे भ्रष्टाचार ने ही राजनीतिक अस्थिरता और संक्रमण को बढ़ावा दिया है। भारतीय राजनीति का विद्रूप चेहरा लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से उभरा है। पुलिस प्रशासन में रिश्वतखोरी का चित्रण हुआ है। वर्तमान समय में भी पुलिस प्रशासन घूस लेकर अपराधों पर पर्दा लगा देती है। जिसके कारण देश में दिन-प्रतिदिन अपराधों की संख्या बढ़ने लगी है। इन्हीं कारणों से हमारे राजनीतिक मूल्य विघटित हो रहे हैं। राजनीतिक मूल्य विघटन से नैतिक मूल्य भी पतन के रास्ते पर पहुंच गए हैं।

5.2 चिकित्सा क्षेत्र में भ्रष्टाचार:-

भ्रष्टाचार का रोग बहुत पुराना है। जब से प्रशासनतंत्र का उदय हुआ है, उसी समय से भ्रष्टाचार का जन्म भी हुआ है। यह भ्रष्टाचार अदालतों, पुलिस विभाग

आदि कार्यालय में देखने को मिलता है। भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी सामाजिक और राजनीतिक बुराई है जो कि दिन-प्रतिदिन समाज की जड़ों को खोखला कर रही है। भ्रष्टाचार अर्थ की बढ़ती लालसा के कारण ही हो रहा है। व्यक्ति अधिक से अधिक धन एकत्रित करने के लिए इस राजनीतिक बुराई की चपेट में आ रहा है। आज के युग का मनुष्य इतना धनवान बनना चाहता है कि धन एकत्रित करने के लिए किसी भी नैतिक तथा अनैतिक कार्य को अपना लेता है। सी.पी श्रीवास्तव के अनुसार "भ्रष्टाचार का प्रवाह उद्दाम वेग के साथ बह रहा है और इसने लोगों को स्वच्छ प्रशासन से वंचित तथा विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया है। भ्रष्टाचार ने वास्तव में एक महामारी का रूप ले लिया है और अधिकांश नौकरशाही, पुलिस, न्यायपालिका और राजनीति सत्ता सब इसकी चपेट में हैं।"[15] आज के समय में भ्रष्टाचार ने चिकित्सा जैसे क्षेत्रों को भी प्रभावित कर रखा है। लेखिका ने 'विज़न' उपन्यास में कुछ ऐसे दृश्यों को दिखाया है, जहां पर इतना भ्रष्टाचार है कि लोगों को अपना जीवन जीना दुर्लभ लगता है। "हर जगह भ्रष्टाचार है। यहां भी लागू है डेढ़ हज़ार की आंख चार हज़ार में भी मिले, पर मिले तो सही।"[16] उपन्यास में मरीजों के जीवन का वर्णन किया गया है। शरण आई सेंटर एक प्राइवेट अस्पताल है जिसमें मरीजों से मनचाहे पैसे लिए जाते हैं। मरीज सोचते हैं कि आंख के लिए लेंस मिल जाए चाहे महंगा ही। यहां पर मरीजों को बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मरीजों को संघर्ष करते हुए दो-दो साल हो जाते हैं लेकिन फिर भी उनकी बारी नहीं आती। जब भी उनकी ऑपरेशन के लिए बारी आती है तो आंख बिक जाती है। ऐसा उस मरीज के साथ चार बार होता है। इतना संघर्ष करने के बाद नंबर तो आता है लेकिन पूरी तरह व्यक्ति अपने काम में सफल नहीं होता। इस प्रकार वह निराश होकर घर लौट जाता है। उपन्यास में मरीज दाम से कुछ अधिक रुपए देने को भी तैयार होते हैं लेकिन उन्हें लैंस नहीं मिलता। उपन्यास की मुख्य पात्र डॉ. नेहा जब आई सेंटर की बहू बनकर आती है तो उसे अस्पताल में फैले भ्रष्टाचार को देख कर बहुत दुख होता है। अस्पताल में भ्रष्टाचार का प्रचार डॉ.आर.पी. शरण द्वारा ही हुआ है। इस प्रकार उपन्यास में पैसे का प्रभाव दिखाया है। अमीर लोग पैसे के बल पर आंख खरीदने की बात करते हैं। यही बात गरीब मरीजों के लिए परेशानी बन जाती है। उनके पास तो बड़ी मुश्किल से ऑपरेशन के पैसे आते हैं। वे अधिक दाम देने

की बात सोच भी नहीं सकते इसीलिए जब तक उनकी बारी आती है तो ऑपरेशन के समय आंख बिक गई होती है। इस प्रकार अमीर लोग अपना काम पैसे के बल पर साधते देखे गए हैं। लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से विघटित हो रहे राजनीतिक मूल्यों के कारणों पर नज़र डाली है। आज के युग में चिकित्सा जैसा स्थान भी भ्रष्ट हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों के लिए दूसरों से धन बटोर रहा है। पैसा ही एकमात्र मनुष्य के लिए जीवन का उद्देश्य रह गया है। उपन्यास में डॉक्टरों की नियत इतनी खराब हो गई है कि वे मरीजों से पैसे ऐंठने में लगे हुए हैं। डॉ. नेहा को अस्पताल में ऐसा माहौल बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। डॉ. नेहा ऐसी डॉक्टर है जो कि बिना टांके के सर्जरी करती थी। इस सर्जरी को ज्यादा समय नहीं लगता। यह डे केयर सर्जरी कहलाती है। इस सर्जरी में एक-दो घंटे के लिए की मरीज को रुकना पड़ता है। उसके बाद उसे घर भेज दिया जाता है लेकिन उपन्यास में डॉक्टर आर.पी.शरण द्वारा रचाया कुछ और ही खेल देखने को मिलता है "पापा डे केयर सर्जरी थी। नेहा कहती है, दो घंटे से ज्यादा रोकने की जरूरत नहीं होती।"[17] नेहा ने एक मरीज की डे केयर सर्जरी की तथा मरीज को घर भेज दिया। जब डॉ.आर.पी.शरण को इस बात का पता चलता है तो वह गुस्सा होते हैं। वे नेहा को बताते हैं कि सर्जरी चाहे थोड़े ही समय की हो लेकिन मरीज को रात के लिए बैड ज़रूर देना है। इस तथ्य से डॉ.आर.पी. शरण का निजी हित सामने आता है। वह मरीजों के हित के बारे में नहीं बल्कि अपने अस्पताल तथा स्वयं के हित के बारे में सोचता है। जिससे कि वह अधिक से अधिक धन कमा सके। अगर मरीजों को बेड दिया जाएगा तभी तो उसकी धन में बढ़ोतरी होगी "आमदनी का आधा हिस्सा कमरों की बुकिंग से आता है।"[18] डॉ.आर.पी.शरण अस्पताल की असलियत को नेहा को बताते हैं। वह नेहा को समझाते हैं कि जो अस्पताल के पंखे, बिजली का सारा खर्च है, यह सब मरीजों के पैसे से ही निकाला जाता है। अगर इन मरीजों को दिन में बुलाकर दिन में ही लौटा दिया जाए तो अस्पताल को आय कहां से आएगी। नेहा को ससुर की बातें सुनकर हैरानी होती है तथा उसे दुख भी होता है। नेहा अपने पति डॉ. अजय से सारी बात कहती है तो वह भी पापा की बात को ही सही ठहराता है। इस प्रकार लेखिका ने अस्पतालों में हो रहे भ्रष्टाचार को दिखाया है। डॉ. एक दिन की सर्जरी को भी कई दिनों की बता देते हैं। यह भी उनका पैसे कमाने का

एक तरीका है। लेखिका ने अस्पताल के डॉक्टरों की तिकड़म बाजी को दिखाया है। मरीज डॉक्टर की बात को ही सत्य मानते हैं तथा डॉक्टर अपनी बातों में उन्हें फंसा लेते हैं। लोगों को तो डॉक्टरों की प्रत्येक बात सत्य लगती है। उपन्यास में मरीजों का शोषण होता दिखाया गया है। डॉ. नेहा को डॉक्टर शरण की इस नीति पर आपत्ति होती है लेकिन उसे चुप करवा दिया जाता है। उसे अस्पताल के हित के बारे में सोचने के लिए परामर्श दिया जाता है। डॉ. अजय भी अपने पिता के हक में ही बात करते हैं। डॉ. अजय एक पुतले की तरह बनकर सब कुछ देखते रहते हैं। उनका मानना है कि हमारे देश के लोगों में किसी टेक्निक का कोई ज्ञान नहीं होता। उन्हें जो बोला जाता है, लोग वैसा ही करते हैं। वर्तमान समय में भी समाज की यही दशा है। इतना भ्रष्टाचार बढ़ गया है कि मरीजों को बीमारी के बहाने के कई दिनों तक अस्पताल में रखा जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि सब लोग शिक्षित नहीं होते उन्हें अपने बारे में पूरा ज्ञान ही नहीं होता। उन्हें जो डॉक्टरों द्वारा बोला जाता है वे यह सब करने को ही अपना कर्तव्य मानते हैं। डॉक्टर अपने कर्तव्य से पीछे हटते देखे गए हैं। ऐसी दशा में आर्थिक रूप से कमज़ोर मरीजों को ज्यादा हानि उठानी पड़ती है। उनके पास इलाज के लिए पैसा नहीं होता। जब इलाज के लिए पैसा आता हैं, तब उनके लिए अस्पताल के रहने, खाने-पीने का बोझ नहीं उठ पाता। जिसके कारण कई लोग तो अस्पताल में इन्हीं कारणों से नहीं पहुंच पाते हैं। अमीर मरीजों के साथ निम्न वर्ग भी पिस रहा है। प्राचीन समय में डॉक्टरों का नैतिक मूल्य अपने मरीज को ठीक करना होता था लेकिन आज परिस्थितियां बिल्कुल बदल चुकी हैं। आज के चिकित्सा क्षेत्र में पैसा प्रधान बन गया है। 'विज़न' उपन्यास में भ्रष्ट चिकित्सक अधिकारी का विवरण हुआ है। स्वतंत्रता के पश्चात देश में कई सुधार हुए हैं लेकिन आज भी इनमें कई भ्रष्ट तथा अफसरशाही लोगों का वर्चस्व बना हुआ है। इस राजनीतिक व्यवस्था का सबसे अधिक प्रभाव भारतीय नारी पर पड़ा है। सरकारी अधिकारी अपनी कूटनीतियों का शिकार नारी को ही बना रहे हैं। विवेच्य उपन्यास में सरोज महिला पात्र अपनी सर्जरी के लिए अस्पताल आती है। इसको अपना भेंगापन दूर करना था। वह सर्जरी के लिए डॉ. अनुज वर्मा की ओ.पी.डी. में जाती है लेकिन यहां डॉ. अनुज द्वारा सरोज के साथ छेड़छाड़ कर दी जाती है। "यह छेड़छाड़, यह

जोर-जबर्दस्ती..."[19] सरोज ओ.पी.डी. से अस्त-व्यस्त अवस्था में भागी हुई बाहर निकलती है। एक ऐसा कमरा खोज रही थी जहां पर कोई महिला डॉक्टर हो। डॉ. आभा अपने कमरे में मरीजों को देख रही होती है, वह उसी कमरे में घुस जाती है। डॉ. आभा सरोज को देखकर दंग रह जाती है। आभा द्वारा सरोज को पूछने पर पता चलता है कि यह सब डॉ. अनुज वर्मा ने किया। डॉ. आभा को यह सब पता चलने पर स्वयं पर शर्म आने लगती है। डॉ. आभा इतनी शर्मसार हो जाती है कि वह सरोज से आंखें नहीं मिला पाती। उसने अपने व्यवसाय को लज्जित होते देखा। इस प्रकार उपन्यास में डॉक्टर द्वारा एक मरीज महिला का बलात्कार किया जाता है। लेखिका ने बताया है कि आज का समाज इतना भ्रष्ट हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़रूरतों की पूर्ति में लगा हुआ है चाहे वह पूर्ति शारीरिक तौर पर ही क्यों न हो? यहां पर चिकित्सा व्यवस्था सेवा व्यवस्था न रहकर पेशा बन गई है। अगर ऐसी ही अवस्था रही तो यह असामाजिक तत्वों का शरणस्थली बन जाएगी। डॉ. आभा एक ईमानदार महिला चिकित्सक अधिकारी है जो कि सरोज को न्याय दिलवाना चाहती हैं। डॉ. आभा एक पत्र लिख लेती है जिसमें सरोज पर डॉ. अनुज द्वारा किए गए पूरे अत्याचार का विवरण होता है। डॉ. आभा अपने विभाग के हेड के पास सरोज को लेकर जाती है। डॉ. चोपड़ा इनके विभाग के हेड होते हैं। डॉ. आभा, चोपड़ा को पत्र देती है। सरोज भी उसके साथ होती है। डॉ. चोपड़ा पत्र को काफी समय तक देखते रहते हैं। अंत में डॉ. आभा को पूछते हैं कि तुम क्या चाहती हो? डॉ. आभा ने अपना मंतव्य बताते हुए कहा कि अनुज को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए लेकिन कुछ दिनों बाद सरोज को डॉ. चोपड़ा द्वारा पैसे देकर बयान ही बदलवा दिया जाता है। सरोज सब कुछ बदल देती है जो उसके साथ हुआ होता है। इस प्रकार उपन्यास में डॉ. अनुज वर्मा एक बड़े बाप का बेटा होता है। जिसके बाप का अस्पताल में भी वर्चस्व होता है। उपन्यास में पैसे के माध्यम से सत्य को असत्य घोषित कर दिया जाता है। इसमें भी विघटित हो रहे राजनीतिक मूल्य के पीछे बड़े-बड़े अमीर लोगों का रवैया सामने आया है। आज पैसे के आगे बड़े से बड़े सत्य को असत्य कर दिया जाता है। पैसा मनुष्य को अपराध वृत्ति की ओर अग्रसर करता देखा जा सकता है। जिस व्यक्ति के पास पैसा है, वह आज के समय में प्रत्येक कार्य को आसानी से कर सकता है। चाहे वह कार्य समाज की दृष्टि से अनैतिक

ही क्यों न हो? रचनाकार ने पैसे के बल पर भ्रष्ट हो रहे चिकित्सक अधिकारियों का वर्णन किया है।

उपन्यास का पात्र डॉ.आर.पी.शरण शहर के माने जाने वाले आई सेंटर के विख्यात संस्थापक एवं डॉक्टर होते हैं। यहां पर फेको अर्थात बिना टांके की सर्जरी का प्रचलन भी था। इस आई सेंटर में जो सरकार द्वारा मुफ्त में लेंस मरीजों की आंख में डालने के लिए आए होते थे, वह भी पैसों से बिकने लगे। डॉ. शरण इतना अर्थ प्रधान डॉक्टर है कि प्रत्येक काम में स्वयं का मुनाफा चाहता है। इनके अस्पताल में ऐसी धांधली हो रही थी जिसे देखकर डॉ. नेहा अचंभित रह जाती है "रोगियों की आंखों का ऑपरेशन कर दिया गया और लैंस डाले ही नहीं।"[20] अस्पताल में मरीजों की आंखों का ऑपरेशन किया जाता था लेकिन बाद में पता चला कि लेंस ही नहीं डाले गए। बिना लेंस डाले ही आंख का ऑपरेशन कर दिया जाता है। मरीजों से ऑपरेशन की पूरी प्रक्रिया करवाई जाती है। उन्हें धोखे में रखकर डॉक्टरों द्वारा ऐसा भ्रष्टाचार किया जाता है। ऑपरेशन के लिए उन्हें कई महीनों इंतजार के लिए बोला जाता है। मरीज इतनी लंबी प्रक्रिया के बाद भी ऑपरेशन के लिए आते हैं। ऐसी प्रक्रिया इसीलिए करवाए जाती है कि मरीज, डॉक्टर पर पूरा विश्वास कर सकें। यहां पर डॉक्टरों के बेईमान चेहरे पर से कपड़ा हटाया गया है। उपन्यास में धन बटोरने के अलग-अलग मार्ग दिखाएं हैं। धन एकत्रित करने के लिए डॉक्टर, मरीजों के भविष्य को खराब करते हुए देखे जाते है। यह सब धांधली एक प्राइवेट आई सेंटर में होती है। जिसमें इलाज के नाम पर मरीजों के साथ धोखा किया जाता है। डॉ. शरण ने अपने आई सेंटर में अधिक मुनाफा कमाने के उद्देश्य से एक होनहार डॉ. नेहा नाम की लड़की से अपने बेटे का विवाह करवाया ताकि नेहा बिना टांके की सर्जरी करके अधिक से अधिक पैसा कमा सकें। यहां पर सामाजिक संबंधों को भी पैसे के ऊपर रख कर तोला गया है। डॉ. नेहा अस्पताल में चल रही ऐसी धांधली के खिलाफ़ थी लेकिन नेहा को डॉ. शरण के आगे बोलने का कोई अधिकार नहीं था। इस प्रकार रचनाकार कहना चाहती है कि कथा में अपने हित के बारे में सोचा गया है न कि मरीजों के हित के बारे में। वर्तमान समय में भी अस्पतालों में ऐसे ही धांधली चल रही है। इन सब कारणों से देश में मूल्यों का विघटन दिन-प्रतिदिन हो रहा है। मनुष्य के अंदर मानवता

समाप्त होकर वह अनैतिक कार्य में संलग्न हो रहा है। मानवता का स्थान लुप्त होता जा रहा है। अस्पतालों में आज भी धोखे के साथ कई ऐसे दृश्य देखने को मिल रहे हैं। लोगों को किसी बड़ी-बड़ी बीमारी का झांसा देकर उनके अन्य अंग लिये जाते हैं। लोगों को इस बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है। लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से जनता को जागरूक भी किया है। छोटे शहरों में ऐसे भ्रष्टाचार की अभी तक कमी पाई गई है लेकिन बड़े-बड़े महानगरों में लोगों को बीमारी के नाम पर तेजी से लूटा जा रहा है। इस प्रकार लेखिका का उपन्यास साहित्य लोगों को अपने हितों के बारे में सोचने के लिए मज़बूर करता है। इस तरह इसको पढ़ने के बाद लेखिका ने वर्तमान समय के डॉक्टरों पर भी व्यंग्य किया है कि वे अपने काम को सेवा न मानकर धन बटोरने में लगे हैं। प्राचीन समय में अस्पतालों की ऐसी दशा नहीं थी लेकिन जैसे-जैसे समय बीत रहा है अर्थात समाज आधुनिक हो रहा है, वैसे-वैसे लोगों को कई समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। उपन्यास में डॉ. आभा तथा डॉ. नेहा, आकाश नाम के डॉक्टर के बारे में बात करती हैं। वह एक ऐसा डॉक्टर है जो कि किसी अन्य डॉक्टरों के नाम पर सर्जरी करता है "आकाश ने तीन-चार आई सेंटर ज्वाइन कर लिए हैं। उनके बोर्डो पर उसका नाम नहीं रहता। वजह है कि वह उन सेंटरों के मालिकों के नाम पर सर्जरी करता है।"[21] आकाश अन्य अस्पतालों में जाकर सर्जरी करता है। अस्पतालों में नाम तो उसी डॉक्टर का होता है लेकिन उनके स्थान पर आकाश यह काम करता है। आकाश अयोग्य अस्पताल के डॉक्टरों के आगे अपनी योग्यता को बेचता हुआ दिखाया है। डॉक्टर आकाश एक ही समय में कितना मुनाफा कमाता हुआ प्रतीत हो रहा है। उपन्यास में चिकित्सा क्षेत्र में फैल रही भ्रष्टता को दिखाया गया है कि योग्य डॉक्टर अपने को बेच देता है। इन योग्य डॉक्टरों को इसलिए बिकना पड़ा क्योंकि कुछ डॉक्टर नाम की डिग्री लेकर विभाग में आते हैं जोकि काम के लायक नहीं होते परंतु अपने कागजी डिग्री को दिखाकर कार्यरत हो जाते हैं। पिछले तथ्यों में जैसे चर्चा हुई थी कि अजय भी इसी तरह डॉक्टर बनकर आया है। उसी की तरह अनेक लोग पैसे के बल पर डिग्री को प्राप्त कर लेते हैं। डिग्री में लगा पैसा अपने इसी तरह की कमाई से भरपाई करते हैं। वर्तमान समय में भी अस्पतालों में ऐसा ही भ्रष्टाचार चल रहा है। मरीजों को बेवकूफ बनाया जाता है। उनसे पैसे अर्थात फीस वही ले जाती है

जो उस नाम के डॉक्टर की ही होती है लेकिन उसकी जगह अन्य डॉक्टर सर्जरी पर जाता है। यह सब कार्य अस्पताल के गोपनीय कार्यो में चलते हैं। इस प्रकार के डॉक्टर प्रतिभा वाले डॉक्टरों पर बलात्कार जैसा प्रहार करते हैं। आज के युग में यही सब देखने को मिलता है जिसके कारण यह भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसको समाप्त करना बहुत बड़ा युद्ध है। इसको समाप्त इसीलिए नहीं किया जा सकता क्योंकि लोगों को अपना इलाज करवाने के लिए आना तो अस्पताल ही पड़ेगा। उनके पास अन्य कोई चारा नहीं है। आज की पीढ़ी चाहे शिक्षित भी है लेकिन अस्पताल में फैले भ्रष्टाचार को कम नहीं कर पा रही है। आज के लोगों में तो यह प्रचलन बन गया है कि कहीं भी बोरी भरकर पैसे की जाओ और डॉक्टर बनकर आ जाते हैं। वे अपने क्षेत्र में इसी उद्देश्य से आते हैं कि वे बोरी भर-भर कर पैसे कमाएंगे। यही सब दृश्य देखने को मिलता है। अगर ऐसा ही रहा तो देश में योग्य डॉक्टरों की कमी से मनुष्य जाति को ही जूझना पड़ेगा। लेखिका ने यहां पर उपदेशात्मक स्वर में पात्रों के माध्यम से आज की स्थिति का बयान किया है। मनुष्य दिन-प्रतिदिन लालची प्रवृत्ति का होता जा रहा है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्य कार्यों की ओर अग्रसर हो रहा है। मनुष्य के अंदर देशप्रेम, जनसेवा का भाव समाप्त होता जा रहा है। किसी को अपने नैतिक मूल्यों की परवाह नहीं है। अपने अहं को जागृत रखने के लिए स्वार्थी बनता देखा है। आज के व्यक्ति का धनवान बनना ही जीवन का मुख्य लक्ष्य रह गया है। उपन्यास में डॉ. चोपड़ा इतने भ्रष्ट अधिकारी हैं कि अपने कार्य में हेराफेरी करते हैं। डॉ. आभा तथा डॉ. चोपड़ा दोनों मिलकर एक मरीज की आंख की सर्जरी कर रहे होते हैं। चार-पांच अन्य लोग भी इन डॉक्टरों की मदद के लिए खड़े हैं। ऑपरेशन में मरीज की आंख खोल दी गई है अर्थात आंख पर चीरा लगा दिया गया है। मरीज ने जो लेंस का चयन किया था वह सामने होता है। डॉ. चोपड़ा ने ऑपरेशन करते समय लेंस को बदलवा दिया। नर्स ने लेंस बदलने में कम से कम तीस-चालीस मिनट लगा दिए। जब तक लेंस बदला गया तब तक मरीज की आंख खुली रही। डॉ. आभा, डॉ. चोपड़ा की ऐसी क्रियाओं को देखकर बहुत क्रोधित होती है। इस तरह देखा गया कि डॉ. चोपड़ा लोगों की आंखों का ऑपरेशन करते समय अपने इच्छा का लेंस डालता है जोकि कम दाम का होता है लेकिन ऑपरेशन से पहले मरीजों को अच्छी किस्म का लेंस

दिखाकर उनसे पैसे वसूल लिए जाते हैं। ऑपरेशन में सामान्य लेंस डाल दिया जाता है। डॉ. आभा को जब डॉ. चोपड़ा की ऐसी घिनौनी हरकत का पता चलता है तो वह इसका विरोध करती हुई कहती है "आप जितने भी लेंस लाए होंगे, मुंह मांगी कीमत पा गए होंगे, क्योंकि इन पर विदेश की मोहर लगी है।"[22] यह सब लेंस डॉ. चोपड़ा ने विदेश से मंगवाए थे। उन पर विदेश की हर मोहर लगी थी जिसके कारण मरीज उसकी ओर आकर्षित होते हैं। डॉ. चोपड़ा ने जो मुंह मांगी कीमत मांगी उसे मिल गई। डॉ. चोपड़ा को पता है कि भारतीय लोग विदेशी चीजों को अधिक पसंद करते हैं इसीलिए विदेशी नाम बोलकर किसी को भी अपने घेरे में ले लेता है। भारतीय लोग विदेशी वस्तुओं को खरीद कर सबसे बड़ा स्वर्ग समझते हैं। लोग सोचते हैं कि विदेश में अमर होने की दवाई बनती है। उपन्यास में मरीजों को यह ज्ञात नहीं होता कि उनका डॉक्टर विदेश के नाम पर उन्हें ठगता है। इस प्रकार लेखिका ने डॉक्टरों के घोटाले का पर्दाफाश किया है। इस उपन्यास में डॉक्टरों द्वारा की जाने वाली धांधली का वर्णन मिलता है। डॉक्टर लोग ऑपरेशन करते समय भी लोगों के जीवन के साथ खेलते रहते हैं। उन्हें बिल्कुल परवाह नहीं होती कि ऐसा करते समय मरीज का जीवन भी खराब हो सकता है। इस प्रकार वर्तमान समय में भी ऐसे अनैतिक कार्यों की एक लंबी सूची बन गई है। आज की पीढ़ी चाहे पढ़ी लिखी ही क्यों नहीं है? लेकिन उसे ऐसे भ्रष्ट डॉक्टरों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक डॉक्टर अपना मान सम्मान तो बनाए रखते ही हैं, साथ ही साथ ऐसे कार्यों को भी करते हैं। मरीजों को ऐसे काले कारनामे के बारे में बिल्कुल भनक नहीं लगती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि डॉक्टर असल में उन्हें विदेशी नाम देकर लेंस को बेचते हैं। ग्राहक भी विदेश का नाम सुनते ही डॉक्टर के चंगुल में फंस जाते हैं। वर्तमान समय में भी बड़े-बड़े शहरों में ऐसे भ्रष्टाचारी डॉक्टर बैठे हैं जो कि जनता को अपनी बातों में फंसा कर लूट लेते हैं। लेखिका ने चिकित्सा क्षेत्र में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। इसी उपन्यास में भ्रष्ट शिक्षा नीति का वर्णन किया गया है। एक शिक्षा जो अपनी काबिलियत के आधार पर प्राप्त की जाती है तथा दूसरी जोकि घूस देकर ग्रहण की जाती है। उपन्यास में ऐसी ही शिक्षा का वर्णन है जोकि जो जहां घूस देकर डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करने का ब्यौरा मिलता है। डॉ. शरण का इकलौता बेटा अजय होता है।

प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है कि उसके बाद उसकी संतान उसके कारोबार को चलाए। ऐसा ही दृश्य उपन्यास में देखने को मिलता है। अजय ने कई बार मेडिकल परीक्षाएं दी लेकिन वह उत्तीण नहीं हो सका। डॉ. शरण को अपना सपना पूरा होता दिखाई नहीं दे रहा था इसलिए डॉ. शरण ने 'डोनेशन' देकर अजय को डॉक्टर की डिग्री दिलवाई। डॉ. शरण बड़े आदमी थे, उनका बहुत नाम चलता था। उन्होंने अपनी इसी ख्याति के कारण अपने बेटे को डॉक्टर बनवाया "बड़े बाप का बेटा बड़ी रकम की थैली लेकर डॉक्टर बनने गया क्योंकि बाप के आई सेंटर का बारिश जो बनना था।"[23] इस तरह उपन्यास में एक बड़े बाप का बेटा पैसे के बल पर डिग्री प्राप्त करता हुआ दिखाया गया है। डॉ. अजय अपने कार्य क्षेत्र में बिल्कुल भी दक्ष नहीं होता। उसके पास केवल नाम की डिग्री होती है। वह डिग्री एक कागज के अतिरिक्त कुछ नहीं है। लेखिका ने यहां पर स्पष्ट किया है कि आज के युग में पैसे के बल पर डिग्री अर्थात कुछ भी किया जा सकता है। एक डॉक्टर के लिए तो यह एक मामूली बात है क्योंकि उसे अपना व्यवसाय जो आगे बढ़ाना होता है। चाहे वह अपने कार्य में अच्छे से परीक्षण कर पाए या नहीं। डॉ. शरण जैसे व्यक्ति आज भी अपने व्यवसाय के लिए पैसे कमा लेते हैं। यह मरीजों के साथ खिलवाड़ है। आधुनिकता के दौर में यह एक प्रचलन बन गया है। यह 'डोनेशन' प्रतिभा पर बलात्कार जैसा अत्याचार है। जिस व्यक्ति में यह प्रतिभा ही नहीं, वह उस रणक्षेत्र में कैसे उतर सकता है? लेखिका ने यहां पर यह भी बताया है कि जिस व्यक्ति में योग्यता होती है, वह भी आज के युग में योग्यता पीछे हो जाती है। पैसा प्रथम स्थान प्राप्त कर लेता है। पैसा पहले अन्य क्षेत्रों में चलता था लेकिन आज के दौर में चिकित्सा क्षेत्र भी भ्रष्ट हो गया है। ऐसे डोनेशन वाले विद्यार्थी जब किसी सरकारी कार्यालय में कार्यरत नहीं होते तो वह अपनी डिग्री के बल पर प्राइवेट संस्था स्थापित कर लेते हैं। ऐसी ही स्थिति उपन्यास में देखने को मिली है। डॉ. अजय के लिए उसके पिता ने प्राइवेट आई सेंटर संस्था खोल रखी है लेकिन वह सर्जरी करने में सक्षम नहीं है, इसके लिए डॉक्टर ने एक अन्य मार्ग सुझा दिया है। डॉ. शरण ने एक होनहार लड़की से अपने बेटे की शादी करवा दी है। लेखिका ने आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था में राजनीतिक मूल्य विघटन को चित्रित किया है। कई लोगों ने भी यही परंपरा को अपनाने पर ज़ोर दे दिया है, जिसका परिणाम लोगों को देखने के

लिए मिल रहा है। लेखिका ने अपने उपन्यासों की कथा आज के दौर को व्यक्त करने वाली है। पैसे के बल पर बड़ी-बड़ी उपलब्धियों को हासिल किया जा रहा है। यह उपलब्धियां केवल किताबों तक ही सीमित रह जाती हैं, जैसा उपन्यास में डॉक्टर की डिग्री को लेकर तथ्य है। वह किसी भी अस्पताल तक नहीं है सिर्फ कागजी डिग्री के सिवाय।

5.3 राजनीति में चुनावी संघर्ष

राजनीति का बोलबाला आदिकाल से ही साहित्य में हो रहा है। साहित्य में बदलाव राजनीति के कारण ही होता है। पल-पल बदलती हुई राजनीति ने साहित्य में भी अपनी अमिट छाप छोडी है। साहित्य और राजनीति दोनों ही शोषित और शोषकों के बीच होने वाले संघर्षों की अभिव्यक्ति अपनी-अपनी सीमाओं और सामर्थ्य के अनुसार करते हैं इसीलिए दोनों को ही उसकी रचना का अंग कहा गया है, जिसका आधार वर्गीय समाज है। राजनीति और साहित्य जिस वर्ग से प्रभावित होता है, उसी की सेवा करता है। भारतीय शासन प्रणाली में जनता द्वारा प्रतिनिधि का चुनाव होता है चाहे कोई भी चुनाव हो, उसमें जनता की भागीदारी अवश्य मानी गई है। आज के समय में चुनावों की राजनीति एक संघर्ष बन गई है। इसका अध्ययन लेखिका ने अपने उपन्यास 'त्रियाहठ' में किया है। उपन्यास की महिला पात्र मामी प्रधान पद के लिए उम्मीदवार खड़ी होती है। इससे पहले चुनावों में मामा स्वयं खड़े होते थे लेकिन इस बार प्रधानी पद के लिए महिला सीट आती है जिसके लिए मामा ने अपनी पत्नी को खड़ा किया है "देख लो ब्याह से ज्यादा खटराग है ससुर चुनाव का। पंगत पर पंगत उठ रही है। सो मुर्गा कटे हैं "[24] इस तरह उपन्यास में चुनावों के समय किये जाने वाले प्रचार का वर्णन किया है। मामा चुनावों के प्रचार के बारे में मीरा को बता रहे हैं। मीरा, मामा की भांजी है जो कि बचपन से यहां रहती थी, यही से पढ़ाई की तथा यही पली-बढ़ी। मीरा चुनावों के समय मामी के साथ वोट मांगने के लिए आती है। चुनाव लड़ने के लिए न जाने कितने रुपए लगा दिए। सौ मुर्गा कटे है तथा लोगों का सेवा पानी चल रहा है। यह सब इसलिए करना पड़ता है कि जनता उनके दबाव में आकर उन्हें वोट दें। मामा बता रहे हैं कि ऐसा लग रहा है चुनाव नहीं बल्कि किसी माता पर बलि चढ़ाई जा रही है। इस तरह लेखिका ने आज के

चुनावों की भी स्थिति बयान की है। आज के समय में इतना खर्च बढ़ गया है कि शादी में भी इतना खर्च नहीं होता। रचनाकार के कहने का भाव है कि आज की राजनीति पैसे की राजनीति बन गई है। पैसे के बिना आप चुनाव नहीं लड़ सकते। यह चुनाव चाहे किसी भी पद के लिए हो छोटे से छोटा चुनाव भी काफी पैसा मांगता है। पैसे के बिना आप चुनाव नहीं जीत सकते। उसका कारण यह है कि आपको अपने विरोधी पार्टियों से ज्यादा पैसा लगाना पड़ता है, तभी आप जीत की संभावना रख सकते हैं। उपन्यास में तीन महिलाएं खड़ी हुई हैं। इन तीनों में होड़ चल रही है इसीलिए एक-दूसरे की देखा-देखी में खूब पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है। आज की राजनीति में व्यक्ति की नहीं बल्कि उसके द्वारा खिलाए-पिलाए गए सामान को देखा जाता है। जिसने लोगों की खूब खातिरदारी की उसकी तरफ लोगों का पलड़ा भारी हो जाता है। वर्तमान युग में भी जिस व्यक्ति के पास पैसा नहीं है, वह राजनीति में आने की सोच भी नहीं सकता। आज की राजनीति में चुनाव का प्रचार रिश्वत देकर होता है। यह रिश्वत चाहे किसी भी रूप में हो। आज के चुनाव को शादी से कम खर्च में नहीं लड़ा जा सकता।

'त्रियाहठ' उपन्यास में राजनीति में भ्रष्टता के साथ-साथ लेखिका ने बदलते सामाजिक संबंधों को भी दिखाया है। राजनीति में आने के बाद लोगों के रिश्ते संबंध सब बदल जाते हैं। इसका वर्णन भी उपन्यास में देखने को मिलता है। उपन्यास में प्रधान पद के चुनाव चल रहे हैं जिसमें महिला सीट के लिए अनेक महिलाएं उम्मीदवार के रूप में खड़ी हैं। जिसमें उपन्यास के पात्र मटल्लु की बहू भी खड़ी है। जब वह वोट मांगने जा रही है तो अपने रिश्ते के ससुर-जेठो के पैर न छूकर उन्हें नमस्ते कर रही है। वह स्वयं को ऐसे समझती है कि आज ही जैसे प्रधान बन गई। यह सब देख कर मीरा को बहुत हैरानी होती है। इस तरह लेखिका ने बताया है कि लोग हाथ में पदवी आने पर अपने रिश्ते नातों को भूलते जा रहे हैं। इनके लिए रिश्तो से ज्यादा महत्वपूर्ण पदवी हो गई है। इसके साथ ही एक अन्य महिला उम्मीदवार वोट मांगने जाती है। वह लोगों को हाथ जोड़-जोड़ कर प्रार्थना करती है। यह महिला पात्र करताल की बहू होती है "करताल की जनी चमरौटा में घर-घर गई, चुपचाप सिंगार पिटारी सरका देती है।"[25] इस तरह उपन्यास में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले चुनाव प्रचार का

वर्णन किया है। उपन्यास में महिलाएं उम्मीदवार महिलाओं को खुश करने के लिए उन्हें मनपसंद चीज़े उपहार के रूप में देती हैं ताकि सभी स्त्रियां उसके पक्ष में वोट डाले। उपन्यास में नारियों को लुभाने का प्रयत्न किया गया है। वर्तमान राजनीति में भी नारी उम्मीदवार ऐसे ही चुनाव प्रचार में लोगों को अपनी तरफ करती देखी जा सकती है। नारियों को सजने-संवरने का अत्यंत शौक होता है और उन्हें कोई सजने का सामान भेंट करता है तो इससे बड़ी रिश्वत और क्या हो सकती है? आज की राजनीति रिश्वत पर टिकी हुई है। अगर लोगों से हमें वोट लेने हैं तो उसके बदले में उन्हें भी उपहार स्वरूप कुछ देना होगा। बिना कुछ दिए आप किसी से वोट की उम्मीद नहीं कर सकते। इस तरह लेखिका ने उपन्यास में वर्तमान की राजनीति में चुनावी संघर्ष को व्यक्त किया है। उपन्यास की पात्र मामी चुनाव में खड़ी तो हो जाती है लेकिन उसे यह सब किस्से देखकर बहुत कष्ट होता है। वह अपने आपको कोसती है कि उसने चुनाव लड़ने का निर्णय क्यों लिया? साथ में उसे यह भी सोचने में मज़बूर होना पड़ता है कि अब इस मैदान में उतर गई हूं तो घबराना नहीं चाहिए। इसीलिए वह आज की राजनीति में चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो जाती है। वर्तमान समय में भी ईमानदार उम्मीदवारों की यही स्थिति देखने को मिलती है। सब अपने रिश्ते नातों को भूलकर चुनाव में नहीं उतर सकता लेकिन उपन्यास में इसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है। ऐसा दृश्य विशेषकर गावं में देखने को मिलता है, गांव की अनपढ़ महिलाएं प्रधान पद के उम्मीदवार बनने पर स्वयं को किसी ऊंची पदवी पर पहुंची हुई समझती हैं। इस प्रकार की राजनीति के कारण सामाजिक संबंधों में भी दरार आने लगी है। सभी संबंधों में प्रेम, समर्पण की भावना लुप्त होती जा रही है। उपन्यास में भी एक ही पंचायत की तीन महिलाएं खड़ी हैं जो कि एक-दूसरे को हराने के लिए कई तरीकों से वोट मांगती हैं। सब अपने-अपने तरीकों से जनता को लुभाने के प्रयास में लगी हैं। गांव में ऐसा माहौल बन गया है जैसे कोई शादी ब्याह रचा हो। लेखिका ने भी उपन्यास में पात्रों के माध्यम से चर्चा की है कि वर्तमान की राजनीति किसी शादी विवाह से कम नहीं है।

'इदन्नमम' शीर्षक उपन्यास में भी चुनावों के संघर्ष को व्यक्त किया है। उपन्यास की नायिका मंदा तथा उसकी दादी अपने गांव को छोड़कर किसी दूसरे

गांव में शरण लेती हैं। मंदा के पिता की आकस्मिक मृत्यु हो जाने से उसकी मां किसी दूसरे मर्द के साथ कहीं और भाग जाती है। मंदा और दादी को अपनी सुरक्षा के लिए श्यामली गांव में आना पड़ता है। मंदा तथा दादी श्यामली में पंचमसिहं दादा के संरक्षण में रहती हैं। उनसे मिलने के लिए सोनपुरा से मिट्ठू नाम का पात्र आता है। मिट्ठू दादी को सोनपुरा का सारा समाचार बताता है। इस तरह वह सोनपुरा में भी चुनावों का समय चल रहा है तो मिट्ठू दादी को वहां के चुनावों की खबर देता है "पिरधानी के लिए समझो कि कटन-मरन हो रही है।"[26] मिट्ठू दादी को बताता है कि गांव में दिन-प्रतिदिन चुनाव प्रचार का वातावरण बदल रहा है। गांव में प्रधान पद के चुनाव लड़े जाने के लिए अलग-अलग पार्टियां खड़ी हैं। यह बताता है कि पहले तो निर्विरोध चुनाव होते थे लेकिन अब वैसा समय नहीं रहा। एक ही पार्टी के तीन-तीन उम्मीदवार खड़े हो जाते हैं। ऐसे लोग प्रधान पद का चुनाव लड़ रहे हैं जिन्हें बिल्कुल भी तमीज़ नहीं है। आज की राजनीति में युवाओं ने प्रवेश किया है। इसका जिक्र उपन्यास में मिलता है। यह युवा लोग स्वयं के आगे किसी की नहीं सुनते तथा न ही समझते हैं। यह युवा लोग बूढ़े लोगों की कमियां निकालने में लगे रहते हैं। इसके साथ मिट्ठू काका कहता है "सौ बातों की एक बात, अब पिरधानी भी ससुर व्यापार हो गई है, जो ज्यादा से ज्यादा खरच सके सो बन जाओ पिरधान और फिर काट लो उसका चौगुना कि दस गुना पइसा।" मिट्ठू, बऊ को गांव के चुनावों में जो पैसा बहाया जा रहा है उसके बारे में चर्चा करता है। यहां पर प्रधानी पद को एक व्यापार की तरह बताया है, जिसमें कम लगाओ तथा अधिक से अधिक मुनाफा कमाओ। लेखिका ने उपन्यास के पात्रों के माध्यम से वर्तमान राजनीति पर प्रकाश डाला है। आज भी चुनावों में लड़ाई झगड़े होते जा रहे हैं। एक-दूसरा व्यक्ति विरोधी पार्टी को देखना पसंद नहीं करता है। यहां बताया है कि चुनाव प्रचार में जो शराब आदि पिलाई जाती है, वही लड़ाई-झगड़े का प्रमुख कारण बन गया है। आज के उम्मीदवार चुनावों में पैसा लगाते हैं ताकि जीतने के बाद वह अधिक से अधिक वसूल सकें। उपन्यास में दिखाया गया है कि प्रधान अगर पैसे लगा रहा है तो वह वहीं से दोगुना वसूल कर लेगा। इस प्रकार वर्तमान राजनीति में हो रही धांधली को व्यक्त किया है। आज का प्रत्येक उम्मीदवार बहुत ही बुद्धि तथा चतुराई वाला होता है। वह स्वयं को किसी भी तरह का घाटा करने वाला नहीं हैं,

हर तरफ मुनाफा ही मुनाफा कमाना आज के व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य हो गया है। आज की राजनीति में निर्विरोध की बात नहीं रही है। इस प्रकार आज का प्रत्येक व्यक्ति सेवा के भाव से नहीं बल्कि स्वयं की लालची प्रवृत्ति को लेकर राजनीति में चुनाव लड़ता है। प्राचीन समय में वोट देना एक धार्मिक पुण्य माना जाता था लेकिन आज के युग में वोट देना तथा लेना भी आर्थिक लाभ को रखकर होता है। आज के समय में जो किसी को उपहार में कुछ भेंट करेगा वही व्यक्ति उसे वोट देगा। इस प्रकार आज राजनीतिक मूल्य विघटित हो रहे हैं, साथ ही साथ नैतिकता का पतन भी उपन्यास में देखने को मिलता है।

'चाक' उपन्यास में भी पैसे की राजनीति देखने को मिलती है। उपन्यास का मुख्य पात्र रंजीत एक पढ़ा-लिखा नौजवान होता है। रंजीत अपने परिवार के साथ गांव में रहता है। उसे कहीं भी सरकारी नौकरी नहीं मिलती है, वह गांव में अपने पैतृक खेती को देखता है। अचानक से उसके मन में चुनाव लड़ने का विचार आता है। वह गांव की गंदी राजनीति में सुधार करने के उद्देश्य से चुनाव लड़ना चाहता है। उसकी पत्नी सारंग उसे समझाती है कि राजनीति से तुम गांव में सुधार नहीं कर सकते क्योंकि यहां पर पहले से ही भ्रष्ट राजनीति है। जब वह चुनाव लड़ने के लिए मैदान में आता है तो उसे ज्ञात होता है कि सच में ही चुनाव में कितना संघर्ष है "हमारे तो फत्ते भइया धीर धरे रहे हैं, वही तो बिना पैसे के चुनाव के मैदान में आदमी लंगड़े के समान है।"[28] इस तरह सारंग, रंजीत को समझा नहीं पाती और रंजीत प्रधान पद के लिए चुनाव लड़ता है। जब रंजीत चुनाव के समय प्रचार कर रहे होते हैं तो उन्हें उस समय की राजनीति का ज्ञान होता है। वह कहते हैं कि अगर फत्ते भैया पैसे नहीं लगाते तो बिना पैसे के चुनाव लड़ना असंभव है। इस तरह उपन्यास में पैसे की राजनीति का वर्णन किया गया है। पैसे के बिना चुनाव लड़ना जैसे कि बिना टांग के चलना होता है। उन्हें ज्ञात होता है कि हमारे समाज में पैसे का ही प्रचलन बन गया है। इसका कारण यह है कि कोई भी व्यक्ति पैसा लगाकर राजनीति में इसीलिए आना चाहता है कि वह प्रधान पद पर बैठकर अधिक से अधिक मुनाफा कमा सके। कोई भी प्रधान अपने गांव में प्रचलित बुराइयों को दूर नहीं करना चाहता बल्कि वे उन कुरीतियों का लाभ उठाकर धनवान बनना चाहता है। उपन्यास में प्रधान तथा गांव वाले मिलकर सब भ्रष्टता फैलाते हैं। गांव का प्रधान स्कूल के लिए

ग्रांट मंगवाता हैं, जिसमें वह अपने साथ गांव के लोगों को भी शामिल करता है। यह ग्रांट स्कूल में जिस काम के लिए आई होती है, उसका प्रयोग नहीं होता। यह सब गांव वाले स्कूल के मास्टर को भी इस धांधली में शामिल करना चाहते हैं लेकिन गांव का मास्टर श्रीधर इस कृत्य पर हस्ताक्षर करने को मना कर देता है। जब श्रीधर इसमें शामिल नहीं होता तो गांव के सब लोग मिलकर उस पर हमला करते हैं। जिसमें श्रीधर को काफी शारीरिक चोटें पहुंचाई जाती हैं। इस तरह लेखिका के कहने का भाव यह है कि प्रधान भी ऐसे गलत कार्य करवाते हैं। इन्हें अधिक मुनाफा कमाना होता है। इसी कारण रंजीत भी प्रधान पद के लिए लालायित हो जाता है। "मुफ्त में नहीं लेना चाहते तुम्हारे दस्तक। जब सबकी दस्तक की कीमत है, तो तुम्हारे दस्तको की क्यों न होगी ?"[29] इस तरह प्रधान श्रीधर को समझाता है कि अगर तुम इस ग्रांट पर हस्ताक्षर कर देते हो तो तुम्हें भी कुछ हिस्सा इसमें से दिया जाएगा। इस तरह लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से आज की राजनीति का भी वर्णन किया है। वर्तमान समय में भी सभी राजनीतिज्ञ यही सब करते हैं चाहे वह गांव के प्रधान ही हो। सब लोग मिलकर अधिक से अधिक मुनाफा कमाते हैं। यही सब लोग देखा-देखी में चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस तरह आज के युग में लोग पैसे की राजनीति खेल कर पैसा कमाना चाहते हैं। उपन्यास के पात्र रंजीत के पास चुनाव लड़ने के लिए पैसा नहीं होता लेकिन फिर भी वह राजनीति में चुनावों के समय संघर्ष करना चाहता है। चुनाव में उसके लिए पैसा उसका दोस्त फत्ते लगाता है। इस तरह रंजीत भी अपने पूर्व प्रधान के कृत्यो को देखकर ही चुनाव लड़ने के बारे में सोचता है ताकि वह भी पैसा कमा सकें। रंजीत का चुनाव के मैदान में उतरने के बाद उद्देश्य परिवर्तित होता दिखाया है।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में चुनावों के समय हो रहे भ्रष्टाचार का वर्णन मिलता है। उपन्यास में रंजीत के विरोध में एक अन्य हरि नाम का पात्र भी चुनाव के क्षेत्र में उतरता है। यहां पर लेखिका ने चुनावों के समय तथा चुनाव जीतने के बाद उम्मीदवारों के रवैया का वर्णन किया है। इसी तरह चुनावों में हरि की पत्नी सीमा गांवों में जाकर अपने पति के चुनाव प्रचार के लिए वोट मांगती है। यहां पर लेखिका ने चुनावों के समय उम्मीदवारों के व्यवहार को वर्णित किया है। सीमा गांव की सभी स्त्रियों के साथ ऐसा व्यवहार करती है जैसे कि वह सब उसकी

सखी सहेलियां हो। "बड़ी बूढ़ियों के लिए घुटनों में मलने का तेल दिया। गांव की औरतों को सुरमा और माथे के दर्द की दवा खुले हाथ बांटी। औरतें सीमा के हाथों बिक गई हैं। चार घुसती हैं तो चार निकलती हैं। सीमा के पास से।"[30] इस तरह उदाहरण में वोट मांगने का एक अलग ही तरीका लेखिका ने वर्णित किया है। यहां पर सीमा ने गांव की औरतों को सजने-संवरने का सामान बांटा तथा बूढ़ी औरतों को दवाएं दी। जिसका प्रमुख कारण यह है कि गांव की औरतें उसके तरफ झुकाव बनाकर वोट डाल दें। ऐसे वर्णन से स्पष्ट होता है कि सीमा लोगों से मिलाप नहीं कर रही बल्कि वह वोट इकट्ठा कर रही होती है। सीमा यह सब अपने पति हरि की जीत के लिए करती है। ऐसे-ऐसे घरों में भी जाती है जिसमें उसे कभी कोई काम नहीं हुआ था। सारंग, सीमा की ऐसी बातें सुनकर हैरान होती है। सीमा के ऐसे बर्ताव को देखकर गांव में उसे पतिव्रता नारी समझा जाता है। जिसने अपने पति की जीत के लिए कितना संघर्ष किया है। दूसरी तरफ सारंग ने रंजीत को चुनाव न लड़ने की की सीख दी थी। सारंग ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि वह सीमा जैसा ढोंग नहीं कर सकती थी। इस तरह लेखिका ने वर्तमान समय की राजनीति में चुनावी संघर्ष की बात की है। आज की राजनीति में चुनावों का प्रचार अपने विचार बांट कर नहीं बल्कि औरतों को सजने-संवरने का सामान बांटा जाता है ताकि औरतें प्रसन्न होकर उन्हें वोट दे सके। वर्तमान युग में चुनाव लड़ना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। सभी अपने-अपने तरीके से चुनाव प्रचार करते हैं। इस तरह उपन्यास के माध्यम से ऐसा संदेश मिलता है कि अगर कोई योग्य, गरीब व्यक्ति चुनाव में उम्मीदवार बनने की योग्यता रखता है लेकिन उसके पास प्रचार करने के लिए धन नहीं है तब वह इस गंदी राजनीति में चुनाव नहीं लड़ सकता क्योंकि आज के समय में लोगों को अपनी तरफ करने के लिए व्यक्तित्व का नहीं बल्कि अर्थ की आवश्यकता होती है। इसी तरह की राजनीति पर लेखिका ने भी विचार विमर्श किया है। इस तरह उपन्यास में सीमा ने चुनावों के समय लोगों के घरों में जाकर औरतों की बातें सुनी वही बाद में अपनी सास से उन्हीं औरतों को बेवकूफ कहती है। सीमा गांव की औरतों की बातों पर मन ही मन हंसती है। बाहरी मन से उनके सुख-दुख में भी शामिल हुई थी। इस प्रकार लेखिका ने आज की कूटनीति भरे युग में लोगों की छवि को व्यक्त किया है। लोगों की दोहरी मानसिकता पर प्रकाश डाला है।

बाहरी तौर पर तो सब आम जनता के हित के बारे में सोचते हैं लेकिन अंदर ही अंदर इन्हें बेवकूफ बनाते हैं। आज के समय में भी इसी तरह की मानसिकता वाले लोग देखने को मिलते हैं जो जीत के बाद आम जनता से मेल-मिलाप नहीं रखते। राजनीतिज्ञों को लोगों की कोई याद नहीं रहती और न ही वह ऐसे लोगों के साथ बर्ताव रखना चाहते हैं। 'चाक' उपन्यास में चुनावों के समय दिन-प्रतिदिन बढ़ रही राजनीति का दृश्य अंकित किया है।

सब चुनावी उम्मीदवार जनता को खुश करने में लगे हुए हैं। समय उम्मीदवार इसी पर ध्यान दे रहे हैं कि किसी की खातिरदारी में कोई कमी न रह जाए "सबको लिवाने जा रही हैं जीपें। जहां नहीं जा पा रही, उनको किराया दिया जा रहा है। लड़कियां जब वोट देकर जब ससुराल जाएंगीं तो सबको एक-एक धोती और डलिया देकर विदा किया जाएगा।"[31] इस प्रकार जो उम्मीदवार चुनावों में खड़े हैं वे वोट डालने के लिए आने वाली जनता को अलग-अलग सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। जनता को वोट डालने में किसी प्रकार की कोई मुश्किल का सामना न करना पड़े इसीलिए वह उन्हें आने-जाने के लिए गाड़ियां भेज रहे हैं। जहां पर गाड़ियां नहीं जा सकती वहां पर उन्हें बस का किराया दिया जा रहा है। गांव की लड़कियां भी ससुराल से वोट डालने के लिए अपने मायके आई हुई है। इन लड़कियों को ससुराल जाते समय कपड़े भेंट किए जाते हैं। इस तरह उपन्यास में चुनावों के समय उम्मीदवारों द्वारा बढ़-चढ़कर की जाने वाली सेवा का वर्णन किया गया है। यह लोगों को खुश करने का एक अलग ही तरीका चुनाव उम्मीदवारों ने ढूंढ लिया है। चुनाव के समय इस तरह की बहुत सी घटनाएं देखी गई हैं क्योंकि उम्मीदवारों को पता है कि वे जितना लोगों को सुविधाएं प्रदान करेंगे उतनी ही जनता उनकी तरफ आकर्षित होगी। आज गांव में सभी उम्मीदवार इसी तरह संघर्ष करने में जुटे हुए हैं। सभी उम्मीदवार खूब पैसे पानी की तरह बहा रहे हैं। वर्तमान समय में भी राजनीति का ऐसा ही रूप देखने को मिल रहा है। अगर लोग इस तरह से जनता को खुश नहीं कर पाते तो उनकी जीत असंभव हो जाती है। आज की राजनीति में जनता को उपहार देकर खुश करने का फैशन बन गया है। यह चुनावों के समय कोई विशेष बात नहीं होती बल्कि यह तो एक चलन बन गया है। राजनीति में जनसेवा का कोई स्थान नहीं रह गया है। राजनीति में आने का प्रमुख कारण यह हो गया है कि उम्मीदवार तथा

जनता मौज-मस्ती के लिए प्रवेश कर रही हैं। इसी उपन्यास में एक अन्य पात्र जिसकी बीवी बीमार होती है, गांव का प्रधान उम्मीदवार उस व्यक्ति तथा उसकी बीवी को इलाज के लिए अलीगढ़ भेज देता है। प्रधान उम्मीदवार उसकी बीमारी का सारा खर्च तथा आने जाने का किराया उसे देता है। इस तरह गांव के सभी लोग उनकी प्रशंसा में उसको वोट डालने के लिए तैयार हो जाते हैं। यहां पर राजनीति में लोभवृत्ति का वर्णन मिलता है। लोग पैसे के लिए अपने वोट को कैसे बेच देते हैं? आज की जनता अपने मत को स्वार्थ के लिए बेचती है जो कि एक विघटित राजनीतिक मूल्य का उदाहरण है। वर्तमान समय की राजनीति भी व्यापार बन गई है। किसी के मन में जनसेवा का कोई उद्देश्य नहीं है। इस तरह की सुविधाएं चुनावों के समय में जनता को दी जाती हैं। अन्यथा कोई किसी का हाल तक नहीं पूछता। इस तरह उपन्यास ने भ्रष्ट राजनीति को व्यक्त किया है जो कि जनता को भी पथभ्रष्ट कर रही है। ऐसी राजनीति को देखकर व्यक्ति का मन भी भ्रष्टाचारी बनता जा रहा है। किसी को किसी की भलाई से कोई मतलब नहीं रह गया है। इस प्रकार उपन्यास में जो चुनावों के समय संघर्ष बताया है, वह सब उसी समय का नाटक होता है। जनता सत्ता में आने के लिए इस संघर्ष को करती है। सामाजिक हित के लिए नहीं। इसी उपन्यास में चुनावों ने आर्थिक पक्ष को भी प्रभावित किया है। जिसमें सारंग, रंजीत को चुनाव न लड़ने की सलाह देती है क्योंकि उनके पास इतना पैसा नहीं है कि वह चुनावों में पैसा लगा सके। यहां पर चुनावों में प्रचार के लिए पैसा रंजीत का दोस्त फत्ते खर्च करता है। जिसके लिए सारंग और रंजीत में झगड़ा होता है। इस तरह चुनावी राजनीति ने जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। आज की राजनीति में सत्तालोलुपता, स्वार्थ जैसे अनैतिक पक्ष उभरे हैं। जिन्होंने आम जनता को नकारात्मक दृष्टि प्रदान की है। जनता राजनीति से उदासीन ही नहीं जन शोषण में लिप्त दिखाई पड़ी है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र सत्ता में आने के लिए तरह-तरह के प्रयासों में लगा हुआ है। वर्तमान समय की राजनीति ने भी व्यक्ति के चरित्र को महत्व नहीं दिया जाता है बल्कि विशेष बात यह हो गई है कि वह जनता द्वारा प्रचार में कितना धन लगाया जा रहा है? लोग उसका आर्थिक रूतबा देख कर ही वोट डालते हैं। इस प्रकार उपन्यास में भी विघटित हो रहे राजनीतिक मूल्यों पर चर्चा हुई है। राजनीतिक मूल्यों का विकास तब तक

नहीं हो सकता जब तक समाज के लोगों के विचारों में सामाजिक हित की भावना उत्पन्न नहीं होती। इस प्रकार जनता में त्याग, समर्पण, जनसेवा जैसे मूल्य पैदा होने से राजनीतिक मूल्य विकसित हो सकते हैं। उपन्यास में लेखिका ने विघटित होते राजनीतिक मूल्यों की दशा का वर्णन किया है।

उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में पुरुष पात्र बरजोर सिंहं राजनीति में चुनाव लड़ने के लिए आता है। अभी उसकी पत्नी को मरे हुए कुछ ही दिन हुए होते हैं लेकिन उसने चुनाव में भाग लिया। घर के सभी लोग चिंतित है क्योंकि उसके विरोध में कई पार्टियां खड़ी थी। बरजोर को सुरासुंदरी का प्रयोग अच्छी तरह से करना आता था, जिसका उसने चुनाव प्रचार में सहारा लिया। यह चुनाव प्रधान पद के लिए था। घर वालों को किसी को भी उसकी जीत की उम्मीद नहीं थी लेकिन बरजोर सिंह ने वही किया जो उसके लिए जीत का मार्ग साफ कर सकता था। बरजोर ने अपने एम.एल.ए. पद पर बैठे मित्र का भरपूर साथ लिया। यह सब करने के बाद बरजोर सिहं गांव का प्रधान बन जाता है। इस प्रकार अर्थ पर आधारित राजनीति कहीं भी सफलता पा सकती है। जितना धन का व्यय करते हैं उतनी ही हमें वोटें आती हैं। आज की राजनीति भ्रष्ट से भी बदतर होती चली गई है। स्वतंत्रता से पहले लोग राजनीति में जनसेवा के उद्देश्य से आते थे। लोग समाज का विकास करने हेतु चुनाव लड़ते थे। गांव का प्रधान भी अपने पंचायत के हित को सम्मुख रखकर चुनाव लड़ता था। अपने पंचायत में सुधार के कई कार्य करता था लेकिन वर्तमान राजनीति के मूल्य स्वार्थ और शोषण बन गए हैं। दिन-प्रतिदिन राजनीति का घोर विरोधी रूप देखने को मिल रहा है। आज की राजनीति भ्रष्ट होती जा रही है। आज की राजनीति षड्यंत्रों तथा अपराध का केंद्र बन गई है। इस तरह भ्रष्ट राजनीति ने व्यक्ति के किसी भी पक्ष को अछूता नहीं छोड़ा है। राजनीति व्यक्ति के सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित कर रही है। आज की बहुएं चुनावों में आने के बाद बड़े बूढों का सम्मान करना भूलती देखी गई है, उनके लिए सर्वोच्च स्थान चुनावों को हो गया है। राजनीति ने व्यक्ति के आर्थिक स्थिति को अधिक प्रभावित किया है।

5.4 धोखाधड़ी

साहित्य में समाज का कोई न कोई रूप दिखलाई देता है, इसी कारण जीवन के किसी भी पक्ष को उतारने वाली विधा उपन्यास ही है। उपन्यास में ऐसे चित्रण की अधिक सुविधा रहती है। उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र कहा जाता है, इस कारण समाज में अनैतिक गतिविधियों की पहचान उपन्यास में होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को विभिन्न रूपों में मुखर किया है। इनके उपन्यासों की कथावस्तु का आधार लोक जीवन के साथ जनता से जुड़ा है। इनके उपन्यासों का परिवेश आज की पीढ़ी से विकास की दौड़ में पिछड़ा हुआ माना जाता है। इसी कारण यहां के लोग जब विभिन्न मानवीय सुविधाओं के लिए सभ्य समाज से कुछ उम्मीद करते हैं तो उन्हें वहां के अनैतिक, अमानवीय भावों से भरे भ्रष्ट आचरण का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही इनके उपन्यासों में नगरीय और महानगरीय समाज में व्याप्त इन अनैतिक कार्यों को भी स्थान दिया गया है। भ्रष्ट आचरण द्वारा सामाजिक व्यवस्था में जो बुराइयां आई हैं, उसे धोखाधड़ी का नाम दिया गया है। धोखे द्वारा धारण किया गया आचार-विचार चरित्र का विरोधी होता है। आज के समय में जब कोई व्यक्ति अपना कार्य करवाने के लिए अनुचित ढंगों का प्रयोग करता है तो उसे धोखाधड़ी कहते हैं। यह शब्द भ्रष्ट आचरण व्यवहार का प्रतीक होता है। धोखाधड़ी में सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देना सरकारी अभिलेखों में हेराफेरी करना आदि शामिल है।

'अगनपाखी' उपन्यास में धोखाधड़ी का यही रूप दिखाई देता है। भुवन तथा चंदर रिश्ते में मासी-भांजा होते हैं। उपन्यास में चंदर के पिता ने अपने बेटे की नौकरी के लिए भुवन के साथ बहुत बड़ा धोखा किया है। चंदर को नौकरी दिलवाने के बदले में इन्होंने भुवन का एक ऐसी जगह रिश्ता पक्का कर दिया होता है तथा उसका विवाह भी हो जाता है, जहाँ यह लड़का मानसिक रूप से बीमार होता है। जिसका पता भुवन को शादी के बाद पता चलता है "अपने पिता से पूछा कि हमने छुपाया कि उनने? अजय तो कह रहा था, हमने किसी के संग धोखा नहीं किया, बरुआसागर वालों के लड़के की नौकरी लगवाई है। वे अपनी साली के विवाह के लिए राजी हुए।"[32] विवाह के बाद चंदर भुवन के साथ मिलने के लिए उसके घर जाता है। तभी चंदर को उसके पिता द्वारा किए गए धोखे का पता चलता है। भुवन की सास बताती है कि हमने किसी के साथ कोई धोखा नहीं

किया बल्कि यह सब धोखा तो उसके पिता ने किया है। यह धोखा चंदर के पिता ने उसकी नौकरी के बदले में किया था। इस प्रकार उपन्यास में सामाजिक संबंधों में हुए धोखे को पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। भुवन के साथ यह धोखा उसके जीजा ने किया है। भुवन जिसे अपने पिता के समान मानती थी। इस प्रकार उपन्यास में अपने काम को साधने के लिए सामाजिक संबंधों को दांव पर लगाते हुए दिखाया है। वर्तमान समय में लोग अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए किसी भी धोखाधड़ी को अपना सकते हैं। आज के रिश्तो में प्रेम, आपसी लगाव लुप्त होता जा रहा है। सभी लोग स्वयं की सोच में डूबे हैं, किसी को किसी से कोई विशेष लगाव नहीं रहा है।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में अजीत नाम का पात्र मध्य प्रदेश के वन विभाग में सरकारी कर्मचारी है। उसकी नौकरी बहुत मुश्किल से लगी है। घरवालों ने अजीत की नौकरी के लिए अपने गहने तक भेज दिए लेकिन यह नौकरी में हेराफेरी करता है। वह अपने सरकारी पैसे से संतुष्ट नहीं है तथा धोखे से जंगल की लकड़ी काटते हुए पकड़ा जाता है, जिसके चलते उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाता है "अब की बार वे डांग की लकड़ी चोरी छुपे बेचते पकड़े गए। ठेकेदारों से सांठ-गांठ तो पहले से ही थी, मगर सुनते हैं कि आजकल जो उसका नया अफसर आया है बड़ा कठिन है। सो पकड़े गए ।"[33] उपन्यास में दिखाया है कि पात्र सरकारी नौकरी करने के बाद भी अनुचित कार्य करता है। उनके कार्यालय में शशिरंजन नाम का एक बहुत ही सख्त ऑफिसर आया है, जिसने सभी गैर कानूनी कार्य बंद कर दिए हैं। जिसके कारण अजीत गैर कानूनी कार्य करता हुआ पकड़ा जाता है तथा उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। शशिरंजन के आने से सभी कार्यालय के कर्मचारी परेशान हैं। इस तरह आज के सरकारी कर्मचारी अपनी तनख्वाह में से खर्च नहीं करना चाहते हैं, वे अपना खर्च-पानी अवैध कार्यों की पूर्ति से कमाया गया धन आदि से करना चाहते हैं। इस प्रकार अजीत को सुरक्षा हेतु वन विभाग में कार्यरत किया गया है कि वह वनों की रक्षा करेगा लेकिन यहां पर वन सुरक्षा कर्मचारी ही गलत कार्य करते हुए देखे जा सकते हैं। अजीत ने नौकरी से बर्खास्त होने के बाद चंदनपुर के बरजोर सिंह के साथ हाथ बटांना शुरू कर दिया। बरजोर सिंह के चरित्र में भी धोखाधड़ी कूट-कूट कर भरी थी। अजीत ने शराब, दारु के व्यापार से बरजोर सिंह का खूब साथ दिया। सभी

गांव के लोग यह देखकर हैरान थे। इसके अतिरिक्त सरकारी सामानों जैसे सरकारी ऋण को भी यह दोनों स्वंय ही हज़म कर जाते हैं। यहां तक कि इन दोनों ने मिलकर सरकारी ऋण पर जो गांव के प्रधान के हस्ताक्षर होने थे, वह भी अजीत ने स्वयं फर्जी रूप में कर दिए। अजीत ने गांव में आई शक्कर की बोरियां भी अपने हाथ कर ली तथा गांव के प्रधान के रजिस्टर में लोगों के नाम तक चढ़ा दिए। यह सब फायदा अजीत ने स्वयं को लिया। गांव में इस सब का किसी को कोई फायदा नहीं दिया। इस प्रकार लेखिका ने आज के समय हो रहे धोखे को स्पष्ट किया है। आज का व्यक्ति अपने विभाग में ईमानदारी से कमाए गए धन से असंतुष्ट देखा गया है।

वर्तमान युग में भी धोखा व्यक्ति के अंदर इतना समा गया है कि वह इससे बाहर नहीं निकलना चाहता है। अवैध कार्यों में व्यक्ति ने इतना लाभ कमाया है कि उसी कार्य को देख कर वह अपना भविष्य बना लेता है। उपन्यास में ऐसा ही पात्र अजीत सामने आया है। वह एक बार अवैध कार्य करता हुआ पकड़ा जाता है लेकिन इससे सीख नहीं लेता बल्कि उसी को अपने भविष्य के लिए चुन लेता है। वह इससे भी बढ़-चढ़कर गैरकानूनी कार्य करता है। इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में शशिरंजन जैसे ईमानदार व्यक्ति का चरित्र चित्रित किया है, जहां एक तरफ मूल्य विघटित हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें प्रसारित करने की कोशिश भी की जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास में भी धोखाधड़ी का रूप दिखाई देता है। उपन्यास में मंदा के पिता की आकस्मिक मृत्यु हो गई होती है। प्रैम अर्थात मंदा की मां अन्य किसी पुरुष के पास चली जाती है। उसके हिस्से की ज़मीन उसके नाम दर्ज होती है। रतन यादव इसी के लालच में प्रैम को भगा ले जाता है। वह एक लालची व्यक्ति होता है जो कि प्रैम की ज़मीन के कारण ही उसे अपने साथ भगा ले जाता है। रतन यादव ने ऐसे ही कई औरतों की ज़मीन को धोखे में हथिया लिया है "तीन विधवाओं की जमीन चापें बैठा है रतन यादव। किसी को भगाकर तो किसी को बहला-फुसला कर।"[34] उपन्यास में यादव की धोखाधड़ी सामने आती है। उसने प्रैम अकेली को ही नहीं बल्कि अन्य महिलाओं की ज़मीन को भी दबा रखा है। रतन यादव का बेटा राजू यादव तो इससे भी बढ़कर धोखे

का स्वामी है। वह भी ऐसे ही कई धोखे करता देखा गया है। राजू यादव तो बंदूक की नोक पर कई ऐसे गलत कार्य करता है। राजू यादव ने तो सभी वकील, जजों को अपने वश में कर रखा है। आजकल सरकारी अधिकारी भी पैसे के हाथ बिक जाते हैं। यही रूप उपन्यास में देखने को मिला है। इस प्रकार लेखिका ने स्पष्ट किया है कि धोखे से रतन यादव ने कई औरतों की ज़मीन को अपने नाम लगाया है। समाज में भ्रष्ट हो रहे मानवीय मूल्य देखने को मिलते हैं। लोग अर्थ के खातिर अपने चरित्र को इतना गिरा लेते हैं कि किसी अन्य का सामना करने में इन्हें सोचना पड़ता है। रतन यादव के बेटे ने सभी सरकारी अधिकारियों को अपने बस में इसलिए कर रखा है ताकि उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही न कर सके। उन्हें भी पैसे देकर अपने पक्ष में कर रखा है। वर्तमान समय में भी ऐसे मामले देखने को मिलते हैं। जिसमें प्रैम की तरह कई अन्य औरतें भी धोखे से दानव प्रवृत्ति के व्यक्ति के हाथ में चली जाती हैं। प्रैम के नाम ज़मीन होती है जिसके लालच में ही रतन यादव ने उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ भगा लिया था। प्रैम अपने बेटे तथा सास को धोखा देकर ज़मीन के बलबूते पर भाग जाती है। इस तरह उपन्यास में ज़मीन के लिए हुए धोखों का वर्णन किया गया है। यहां पर लोगों द्वारा ज़मीन हथियाने के लिए षडयत्रों की रचना को देखा गया है तथा जिसमें गांव की बेसहारा औरतें फंस जाती हैं। आज के युग में भी ऐसी समस्याएं विशेषत: इसीलिए होती हैं क्योंकि वहां के लोग अनपढ़ होते हैं। उन्हें यह नहीं पता कि कौन किस प्रवृत्ति का व्यक्ति है? ऐसा ही धोखा उपन्यास की पात्र मंदा की दादी (बऊ) के साथ होता है। वह अपने गांव को छोड़कर श्यामली गांव में रहती है क्योंकि प्रैम ने अपने हिस्से की ज़मीन तो छीन ली थी लेकिन वह मंदा को भी छीनने की ताक में थी। इसी डर से बऊ अपना घर-बार तथा ज़मीन को छोड़कर दूसरे गांव में किसी के घर में रहती है। यह घर पंचम सिंह दादा का होता है जो की बऊ के लिए एक सुरक्षित स्थल बन गया है। बऊ तथा मंदा यहीं पर रहती हैं। उनके घर में दादा को छोड़कर लालची प्रवृत्ति के व्यक्ति भी देखे गए जो की बऊ की बची हुई ज़मीन अपने नाम करने के लिए जाल बुन रहे थे। बऊ कुछ महीनों बाद जब अपने गांव वापस लौटती है तो उसे अपने साथ हुए एक बड़े धोखे का पता चलता है। वहां पर उपन्यास का एक अन्य पात्र जगेसर काका बऊ से मिलने को आता है तथा वह बऊ को बोलते हैं कि अगर ज़मीन

बेचने ही थी तो केस क्यों लड़ा? बऊ सुनते ही दंग रह जाती है। उसे इस बारे में कुछ नहीं पता होता है। मंदा को कहती है कि तुम्हें पता है इस बारे में? यह धोखा हम लोगों से कब और किसने किया "बऊ केस के समय बहुत से कागज थे, अंगूठा भी लगाया, क्या मालूम किस समय छल से।"[35] मंदा बऊ को समझाती है कि उस समय बहुत से कागजो पर तूने अंगूठा लगाया था, हो सकता है उस समय किसी ने धोखे से ज़मीन के कागजों पर भी लगवा लिया होगा। बहू असमंजस में पड़ जाती है कि इतना बड़ा धोखा किसने किया होगा? गांव में पता चलता है कि यह धोखा गोविंद सिंह ने किया है, बऊ इनके घर में ही रही थी। गोविंद सिंह, दादा के छोटे भाई थे। गोविंद सिंह की आंख बऊ की ज़मीन पर शुरू से ही थी। इस तरह उपन्यास में विघटित हो रहे राजनीतिक मूल्यों पर प्रकाश डाला है। गांव के लोग ज़मीन हड़पने की ताक में रहते हैं। गोविंद सिंह ने बऊ की लाचारी का लाभ उठाकर, उसकी ज़मीन हड़प ली। बऊ की अनपढ़ता के कारण उसके साथ ऐसी हरकत होती हैं। अनपढ़ता के कारण उसे पता नहीं चला जिसके कारण बहुत से कागजों के साथ ज़मीन के कागजों पर भी अंगूठा लगवा लिया। बऊ तथा मंदा दोनों अकेली इसी ज़मीन के सहारे गांव में रहती थी। उनके पास आय का अन्य कोई साधन नहीं था। बऊ अत्यंत दुखी होती है कि इसी ज़मीन के लिए केस भी लड़ा लेकिन जब यह ज़मीन ही नहीं रही तो उसका जीवन किस काम का? वर्तमान समय में भी ऐसी कई समस्याएं सामने आती हैं। लोग ज़मीन के लिए अपनों से ही भिड़ जाते हैं। गांव के लोग ज़मीन को सबसे अहम मुद्दा मानते हैं। इस तरह की धोखाधड़ी से व्यक्ति अपनों से दूर होता जा रहा है। आज का मनुष्य अपने स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण राजनीति कर रहा है। इस तरह की राजनीति करने से प्रेम, भाईचारा जैसे पारिवारिक मूल्य विघटित हो रहे हैं। उपन्यास में पंचम सिंह दादा एक आदर्श व्यक्ति स्थापित हुए हैं। जिन्होंने बऊ को अपने घर पर पनाह दी है। इसके बदले में उनकी कोई लालच प्रवृत्ति भी नहीं थी। आज की पीढ़ी भी धनवान बनना चाहती है चाहे वह किसी भी तरीके से हो। आज के मनुष्य के लिए धन ही सब रिश्तो में सर्वोपरि है। धन के सिवाय उसे अन्य कोई रिश्ता नाता नहीं सूझता। धोखाधड़ी परिवारिक तथा राजनीतिक मुद्दा बन गया है। यह धोखाधड़ी उपन्यास के सरकारी कार्यालय के कर्मचारियों में ही नहीं बल्कि परिवार के आपसी संबंधों में भी देखी गई है। यह

जायदाद से संबंधित होने के कारण राजनीतिक मूल्य बन गया है। इस तरह लेखिका ने दिन-प्रतिदिन स्वार्थी और बेईमानी प्रवृत्ति को स्पष्ट किया है। यह बेईमानी अपने ही घर को बर्बाद करती देखी जा सकती है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में दो कबीलों की बात हुई है एक कबूतरा तथा दूसरा कज्जा कबीला। कज्जा लोग सभ्य माने जाते हैं। इन लोगों की ज़मीन भी है, जिसके कारण इनकी आय का साधन खेती है। दूसरा कबूतरा कबीले चोरी, लूटमार अन्य गैरकानूनी कार्य करते हैं। उपन्यास के पात्र मंसाराम तथा केहर सिंह एक शराब का ठेका चलाते हैं। यह दोनों कज्जा कबीले से संबंध रखते हैं। यह कोई अवैध कार्य नहीं था क्योंकि उन्होंने सरकार से मंजूरी ली थी। गांव में जब भी पुलिस आती तो मंसाराम को उन्हें अलग से पैसे देने पड़ते थे। "केहर सिंह ने एक हफ्ते की रकम में पांच सौ ज्यादा मिला कर दिए। दरोगाजी खिल गए।"[36] इस प्रकार केहर सिंह ने अपनी दुकान का लाइसेंस तो ले रखा है लेकिन वह पुलिस को पैसे इसीलिए ज्यादा देता है ताकि उसका व्यापार अच्छे से चल सके। केहर सिंह ने अपने ठेके में शराब के अतिरिक्त नाचने वाली औरतों को भी रखा है। पुलिस को इस बात का पता होता है तभी तो वह केहर से ज्यादा पैसे लेकर जाती है। लेखिका ने यहां पर बताया है कि आज के समय में भ्रष्टता व्यक्ति के रग-रग में बस गई है। आज का व्यक्ति धोखाधड़ी से धन कमाने को ही अपना लक्ष्य बना बैठा है। केहर हर हफ्ते पुलिस वाले को पैसे देता है ताकि उसके अवैध कार्यों का किसी अन्य को पता न चले तथा चुपचाप उसका कारोबार उचित ढंग से चलता रहे। इस तरह कहने का भाव है कि आज के समय में जो भ्रष्टाचार, धोखे जैसे अवैध कार्य चल रहे हैं। इस सब के लिए हमारा ही समाज उत्तरदायी माना जाता है। वही अवैध कार्य करता है, जिसके कारण स्वयं को बचाने के लिए सुरक्षाकर्मियों को रिश्वत देता है। कहा जाता है कि केहर सिंह के ठेके पर रंडियां पाली जाती है। उसी के डर से बचने के लिए उसने दारोगा को पैसे दिए। दरोगा के मुंह पर पैसों से ताला लगाता हुआ पात्र देखने को मिलता है। आज के समय में भी पैसे के खातिर तथा पैसे के लिए व्यक्ति काफी नीचे गिरता देखा गया है। उपन्यास में भी पैसे कमाने के खातिर रंडीखाना खोल रखा है तथा पैसे के लिए दरोगा अपना ईमान बेचता देखा जा सकता है। वर्तमान समाज मूल्यविहीन होता जा रहा है। अपनों को पैसे के लिए बेच रहा है। इस

तरह लेखिका ने उपन्यास के पात्रों के माध्यम से बताया है कि व्यक्ति दिन-प्रतिदिन मूल्यों को विघटित कर रहा है। ईमानदारी से कमाए गए धन से कोई भी निर्वाह नहीं कर सकता है, चाहे व्यक्ति के पास कितना है? जब तक वह अवैध कार्य नहीं करता संतुष्ट नहीं हो रहा है। यही सुरक्षाकर्मी समाज के लोगों को अवैध कार्य करने के लिए उकसाते देखे जा रहे हैं। वर्तमान समय में सुरक्षाकर्मियों तथा व्यापारियों में ऐसी ही धांधली चल रही है। कोई भी व्यक्ति एक कमाई से संतुष्ट नहीं है। अर्थ प्रधान बनने के लिए अधिक से अधिक भ्रष्टाचारी बन रहा है। इस भ्रष्टाचार के लिए समाज का व्यक्ति तथा कर्मचारी दोनों ही ज़िम्मेदार दिखाए गए हैं।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में स्कूल में चल रही धोखाधड़ी को स्पष्ट किया है। स्कूल में ऐसी बईमानी चल रही है। जिसमें स्कूल के मास्टर शामिल हैं, लेकिन उपन्यास में कुछ एक ऐसे मास्टर भी है जो कि इस बईमानी से परेशान हैं। स्कूल में तीन मास्टर कार्यरत हैं जिनमें से दो मास्टर कभी-कभार ही स्कूल आते हैं। यह स्कूल गांव में है जिसे देखने के लिए सरकार कभी-कभी आती है। स्कूल में अनुशासन है या नहीं, यह भी जरूरी नहीं कि स्कूल में सरकारी टीम आएगी या नहीं। ऐसा माहौल होने के कारण गांव के प्रधान की जिम्मेदारी बनती है कि वह स्कूल का प्रबंध स्वयं देखे। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे गांव के ही हैं, जिसमें गांव के प्रधान की जिम्मेदारी बनती है कि वह स्कूल को सुचारू रूप से चलाएं। गांव के प्रधान ने गांव के स्कूल मास्टरों में थान सिंह को यह छूट दे रखी है कि वह स्कूल नहीं आता है लेकिन उसकी हाजिरी को ग्राम पंचायत के प्रधान का बेटा चोरी-छिपे से रजिस्टर में लगाता है। श्रीधर स्कूल का अनुशासित अध्यापक है। श्रीधर किसी अन्य गांव से आया है। यहां पर कमरा लेकर नौकरी करता है। एक दिन श्रीधर को हुकुम सिंह की इस धोखे का पता चल जाता है। श्रीधर, हुकुम से रजिस्टर को छीन लेता है "साली बईमानी करते हो। रिपोर्ट करूंगा मैं। भले अलीगढ़ से लखनऊ तक...एक-एक का पर्दाफाश करूंगा। इस थानसिंह को मुअत्तिल न कराया तो...?[37] इस प्रकार उपन्यास में चल रही धांधली को खत्म करने के लिए स्कूल का मास्टर उसका विरोध करता है। इस भ्रष्टाचार में गांव का प्रधान ही शामिल होता है। आज के भ्रष्ट लोग राजनीतिक मूल्य विघटन में शामिल हैं। प्राचीन समय में गुरुकुलों में मुफ्त में बच्चे पढ़ाए जाते थे लेकिन

वर्तमान समय में वेतन देकर भी मास्टर ईमानदार नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति यही सोचता है कि धन आए लेकिन उसे मेहनत नहीं करनी पड़े। बिना मेहनत के व्यक्ति धनवान बनना चाहता है। लोगों में त्याग, जनसेवा जैसे मूल्य नहीं रहे। आज की पीढ़ी में स्वार्थ ही मान्य हो गया है। उनमें अनैतिक भावनाएं घर कर रही हैं। जिसके चलते आज के अध्यापक बच्चों के भविष्य की कोई चिंता नहीं करते हैं। आज के समय में भी स्कूलों की यही दशा हो रही है। कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से अपने कर्तव्य को पूरा नहीं करना चाहता है। आज गांव के स्कूलों में सरकारी अध्यापकों को भी पैसे अर्थात वेतन तक महत्व रह गया है। कोई भी अध्यापक यह नहीं सोचता कि बच्चों के भविष्य का वही एक निर्माता है। स्कूल के बच्चों के भविष्य के साथ अन्याय हो रहा है। आज के समय में सरकारी स्कूलों में ऐसे ही धोखा चलता है। इस सब के लिए गांव के प्रधान जिम्मेदार होते हैं। उपन्यास में भी यही दिखाया है कि प्रधान का बेटा ही ऐसी भ्रष्टता फैलाता है। इसे रोकने के लिए स्कूल मास्टर श्रीधर उसे पहले तो प्रेम से समझाता है तथा बाद में पकड़े जाने पर उसे धमकी भी देता है कि वह उसकी रिपोर्ट करेगा। वह अलीगढ़ में रिपोर्ट करके थानसिहं को स्कूल से बर्खास्त करने की बात करता है। इसी बीच दोनों में मारपीट भी होती है। गांव के लोग श्रीधर को ही कसूरवार ठहराते हैं क्योंकि वह सब भी इस भ्रष्ट काम में शामिल होते हैं। इसी उपन्यास में भ्रष्टाचार का एक और उदाहरण देखने को मिलता है। रंजीत ने एम.एस.सी की पढ़ाई की थी। उसने बहुत सी प्रतियोगी परीक्षाएं दी लेकिन किसी में भी सफल नहीं हो सका। उसने ऐसी परीक्षाएं दी जिसमें की वह लिखित परीक्षा को पास कर लेता था लेकिन अन्य कार्यवाही होने तक उसे बाहर कर दिया जाता है। "सब इंस्पेक्टरी की लिखित परीक्षा धड़ल्ले से पास कर गया। बेईमानो ने सीना नापते समय का घपला कर दिया।"[37] रंजीत ने नौकरी के लिए सब इंस्पेक्टर की परीक्षा पास कर ली थी लेकिन शारीरिक जांच करते समय अफसरों ने धोखा करके उसे बाहर कर दिया क्योंकि पुलिस की नौकरी में छाती की लंबाई-चौड़ाई में रंजीत को फेल कर दिया जाता है। रंजीत ने उनका विरोध किया तथा गाली देकर घर आ जाता है। इस तरह रंजीत के माध्यम से भ्रष्ट व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति चाहे कितना ही होनहार हो लेकिन भ्रष्ट व्यवस्था तथा प्रशासन नहीं चाहता कि वह आगे बढ़े। आज के समय में

कोई भी व्यक्ति अपने दम पर आगे बढ़ना चाहता है लेकिन उसकी योग्यता के आगे पैसा आ जाता है। इस तरह अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि यहां पर आदमी भारी पड़ता है योग्यता नहीं। अगर ईमानदारी से पद के लिए चयन होता तो रंजीत ही इस पद का हकदार था लेकिन यहां पर पैसा भरकर नौकरी ली जाती है। दोनों लड़कों की एक ही पद के लिए नियुक्ति होती है। दोनों में वेतन भी आधा-आधा बांटने की बातें होती है। इस तरह उपन्यास में धोखे तथा रिश्वत की चर्चा की गई है। यहां योग्यता को पीछे कर दिया जाता है। पैसे के आगे किसी की योग्यता सफल नहीं होती दिखाई देती है। इस तरह कहने का भाव है कि वर्तमान का समाज अर्थ प्रधान है। पैसे के बल पर व्यक्ति को मापा जाता है। आज के समय में भी चाहे कोई प्रतियोगिता हो या किसी कॉलेज का प्रवेश, वहां भ्रष्टाचार की नदी प्रवाहित हो रही है। इसके लिए सरकारी संस्थाएं भी जिम्मेदार मानी गई हैं जिन्होंने खुले तौर पर ऐसा रिवाज़ बना दिया है कि विद्यार्थी हो या अन्य कोई व्यक्ति पैसे से बड़ी से बड़ी नौकरी प्राप्त कर लेता है। यह धोखाधड़ी किसी भी क्षेत्र में देखने को मिल सकती है जैसे चिकित्सा क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में। यह राजनीति व्यक्ति को प्रभावित कर रही है। इसके कारण व्यक्ति के सामाजिक संबंध भी टूट रहे हैं। इन सबका कारण हमारा समाज ही है जो कि व्यक्ति को अपनी योग्यता के बल पर आगे बढ़ने नहीं दे रहा है।

5.5 बेरोज़गारी

बेरोज़गारी तब होती है जब कोई व्यक्ति श्रम शक्ति का भागीदार होता है और सक्रिय रूप से रोजगार की तलाश कर रहा है उसे नौकरी नहीं मिल पा रही है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'ठीकरी की मंगनी' में भी बेरोज़गारी की समस्या को लेकर काफी चिंता व्यक्त की है। यहां पर उपन्यास की नायिका महरूख अध्यापिका होने के नाते सभी अध्यापक मिलकर अपने छात्रों के भविष्य को लेकर चिंतित हैं "हम जो हर साल इतनी संख्या में हाईस्कूल पास कर लड़के निकाल रहे हैं, वह पढ़-लिख कर खपेगें कहा? बेकारी और मुंह बाएगी।"[38] इस तरह लेखिका के उपन्यास के पात्र भी रोज़गार को लेकर चिंतित दिखाई देते हैं। ऐसी ही स्थिति 'बेतवा बहती रही' उपन्यास के एक पुरुष पात्र अजीत के चरित्र द्वारा चित्रित की गई है। यहां पर बेरोज़गारी को राजनीतिक मुद्दा बनाकर वर्णित

किया है। बेरोज़गारी में व्यक्ति आर्थिक रूप से संपन्न नहीं होता है। आर्थिक संपन्नता से ही व्यक्ति अपनी गरीबी को दूर कर सकता है। विवेच्य उपन्यास का पात्र अजीत जो कि एक गरीब परिवार से संबंध रखता है, जिसके माता-पिता के पास थोड़ी-सी ज़मीन है। जिन्होंने घर का गुजारा भी बड़ी मुश्किल से चलाया। अजीत के परिवार में उसकी मां तथा बहन भी हैं। घर की सारी जिम्मेदारी अजीत को ही निभानी होती है। घर का गुजारा करने के लिए अजीत का पिता आधबटाई पर दूसरों की ज़मीन में खेती करता है। अजीत को उसके पिता ने पढ़ा-लिखा कर नौकरी के काबिल बना दिया है ताकि वह नौकरी लेकर घर की जिम्मेदारियों को संभाल सके। अजीत बहुत जगह कोशिश करता है लेकिन नौकरी की बात नहीं बन रही थी। सब जगह उसे निराशा ही हाथ लगती। एक जगह नौकरी की बात बनती है लेकिन वहां पर नौकरी लगने के लिए उसे पैसे भरने को बोला जाता है। घर में इतने पैसे नहीं होते कि वह नौकरी ले सके। अपनी मां को गहने देने के लिए कहता है "अम्मा वे मोहरे दे दो।"[39] यहां पर अजीत की मां ने अपनी मोहरे इसलिए रखी थी ताकि वह उर्वशी की शादी में उसे दे सके लेकिन अजीत की नौकरी लगवाने के लिए उसे यह मोहरे देनी पड़ी। इसके अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई चारा नहीं था। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने बेरोज़गारी को दूर करने के लिए गहने तक को बेचते हुए दिखाया है। अजीत अपनी मां के जेवर बेचता है, तभी उसे नौकरी लगती है। उपन्यास में एक विवश तथा लाचार परिवार को दिखाया है जो कि रोज़गार पाने के लिए अपनी महत्वपूर्ण वस्तुओं को बेचता है। वर्तमान समय में भी व्यक्ति बेरोज़गारी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। आज के राजनीतिक युग में नौकरी लेना बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसी परिस्थितियों से व्यक्ति गुजर रहा है कि बिना रिश्वत के बेरोज़गारी दूर नहीं कर सकता "हम का कैरये अम्मा, हाकिम को रुपइया भरने पड़है, तब लगहै नौकरी।"[40] अजीत मां को नौकरी लगने के लिए सब बातें समझाता है। वह अपनी मां को बताता है कि बिना पैसे की कोई नौकरी नहीं मिल सकती। अजीत द्वारा कहे गए वाक्य उपन्यास में व्याप्त भ्रष्टाचार व्यवस्था को वर्णित करते हैं। यहां पर लेखिका ने एक संदेश दिया है कि आप रोज़गार तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब आप उसे रिश्वत देते हैं। इसी रिश्वत को भरने के लिए अजीत की मां को अपनी मोहरे देनी पड़ती हैं जो कि उसने अपनी बेटी की

शादी के लिए रखी होती हैं। आज के समय में भी बहुत ज्यादा बेरोजगारी हो गई है। योग्य से योग्य व्यक्ति नौकरी के लिए भटक रहा है। जिसके पास पैसा नहीं है, वह आज के समय में बेरोज़गार है। बेरोज़गारी को दूर करने के लिए व्यक्ति के पास एक ही रास्ता है रिश्वत। रिश्वत देकर व्यक्ति किसी भी पद को प्राप्त कर लेता है। चाहे वह प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण की ही बात हो। इस तरह आज के युग में बेरोज़गारी का प्रमुख कारण रिश्वत माना जाता है। रिश्वत लेकर ही नौकरी प्राप्त होती है। अगर किसी के पास पैसा नहीं है तो वह बेरोज़गारी जैसी समस्या से जूझता देखा जा सकता है। अजीत अपनी नौकरी के लिए रिश्वत से ही पद को प्राप्त करता दिखाया गया है। एक योग्यता प्राप्त व्यक्ति को रिश्वत देने के लिए अपनी कीमती चीजों अथवा ज़मीन को बेचना पड़ता है ताकि वह रिश्वत देकर नौकरी प्राप्त कर सके। इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के राजनीतिक पक्ष के अंतर्गत विभिन्न अभिव्यक्तियां दी हैं। उपन्यासों में अधिकतर पात्र राजनीति में धन की लालसा के लिए आते दिखाए गए हैं। अधिकतर पात्रों में लालच और स्वार्थ की भावना ही देखी है। कोई भी राजनीति में जनसेवा के उद्देश्य से नहीं आता, सभी पात्र अर्थ केंद्रित दिखाए गए हैं। अर्थ की अंधी दौड़ में शामिल होकर वे इंसानियत और मानवीयता जैसे मूल्यों का क्षरण करते दिखे हैं। वह साथ ही स्वार्थपरता, पदलोलुपता और भ्रष्टाचार के कारण पात्रों द्वारा मूल्यों में विघटन उत्पन्न हुआ है। चाहे राजनीतिक तौर पर भारत आज़ाद है परंतु आर्थिक स्तर पर आज भी गुलाम है। मूल्यों का यह अवमूल्यन मनुष्यों को गिरा चुका है।

संदर्भ सूची:-

1.हुकुमचंद राजपाल, समकालीन कविता में मानव मूल्य, पृ.113
2.जितेंद्र वत्स, साठोत्तरी हिंदी कहानी और राजनीतिक चेतना, पृ.13
3.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.423
4.नासिरा शर्मा, अक्षयवट, पृ.69
5.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.153
6.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, प.8
7.वही, पृ.19

8.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.39
9.वही, पृ.106
10.वही
11.वही, पृ.158
12.वही, पृ.160
13.वही, पृ.268
14.वही, पृ.277
15.सी.पी. श्रीवास्तव, भारत भीतरी का शत्रु, पृ.1
16.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.20
17.वही, पृ.42
18.वही, पृ.46
19.वही, पृ.151
20.वही, पृ.165
21.वही, पृ.148
22.वही, पृ.174
23.वही, पृ.69
24.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.21
25.वही, पृ.70
27.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.197
28.वही
29.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.381
30.वही, पृ.372
31.वही, पृ.425
32.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.101
33.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.61
34.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.143
35.वही, पृ.183
36.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.227
37.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.174

38.नासिरा शर्मा, ठीकरी की मंगनी, पृ.44
39.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.23
40.वही